thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 01 जून 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 01 जून 2014 से 07 जून 2014

ज्ये. शु. चतुर्थी ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 110, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. इंटरनैशनल, अमृतसर में मनाया विद्यालय का स्थापना दिवस

डी.ए.वी इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर में विद्यालय के 17वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भव्य समागम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री जे.पी. शूर जी निर्देशक, पब्लिक स्कूल्स–1 डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली मुख्य अतिथि थे।

सर्वप्रथम हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के साथ विद्यालय के चेयरमैन माननीय डॉ. वी.पी. लखनपाल, प्रबन्धक डॉ. के एन. कौल, प्रिंसीपल अंजना गुप्ता, शिक्षकवर्ग एवं सभी विद्यार्थियों ने इस पवित्र यज्ञ में वैदिक मंत्रों के साथ आहुतियाँ अर्पित कीं। विद्यालय प्रांगण सुगन्धित और

पावन हो गया।

इस अवसर पर विद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा रंगारंग साँस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। छात्र–छात्राओं ने डी.ए.वी. की महत्ता को दर्शाता गीत और वैदिक भजन गाया और शिक्षकगणों द्वारा सुन्दर वैदिक भजन के माध्यम से महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया।

विद्यालय के चेयरमैन डॉ. वी.पी. लखनपाल ने सभी अतिथिगणों का इस पावन समारोह में उपस्थित होने पर स्वागत किया और इस अवसर की बधाई दी।

मुख्य अतिथि श्री जे.पी. शूर जी ने कहा कि आज हमें महात्मा हंसराज को भी स्मरण करना है जो एक विद्वान, उपदेशक, महान लेखक और वैदिक प्रचारक थे। उनका उद्देश्य था कि सारे देश में सुयोग्य व उत्कृष्ट विद्वान पैदा हों।

प्रबन्धक डॉ. के एन. कौल ने भी विद्यार्थियों को अपना आशीर्वाद दिया और विद्यालय के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

शिक्षा में शानदार प्रदर्शन करने वाले छात्र–छात्राओं को इस अवसर पर पुरस्कार भी वितरित किए गए। शान्ति पाठ से समारोह का समापन किया गया।

आर्य समाज, हांसी ने वेद प्रचार के 105 वर्ष पूर्ण किए

आर्य समाज हांसी की स्थापना लगभग 105 वर्ष पूर्व शहर के प्रतिष्ठित आर्य परिवारों के में पूर्ण सहयोग से की गई। समाज के 105 वर्ष पूर्ण होने पर एक विशेष यज्ञ का आयोजन हुआ। आर्य समाज हांसी के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने निजाम हैदराबाद के सत्याग्रह एवं अन्य समाज सुधारक आन्दोलनों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया उसका कृतज्ञता पूर्वक स्मरण किया गया। वर्तमान में चौ. देवदत जी खाण डेवाल प्रधान, श्री विजय कुमार अग्रवाल मंत्री, श्री सुभाष चन्द जी आर्य कार्यकारी प्रधान, श्री सतीश कुमार जी आर्य वरिष्ठ उप–प्रधान एवं कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों के मार्गदर्शन में समाज की गतिविधियाँ सुचारू रूप से चल रही हैं।

समाज में दैनिक, साप्ताहिक यज्ञ एवं सत्संग अनवरत चलता रहता है। वेद कथा, रामायण कथा, ऋषि बोधोत्सव, ऋषि जयन्ती एवं ऋषि निर्वाणोत्सव इत्यादि भी उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा सम्पन्न करवाये जाते हैं।

आर्य समाज हांसी के अन्तर्गत ला. रामशरण दास, वेद प्रचार मण्डल आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के अधीन कार्य करता हुआ वेद प्रचार का कार्य करता है। भजनोपदेशक महाशय जबर सिंह जी खारी प्रति मास लगभग 10–15 गांव/कस्बों ने ऋषि संदेश पहुंचाते हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, भजनोपदेशक महाशय जबरसिंह खारी को सहायतार्थ 2000/– रूपये प्रति माह दे रही है।

डी.ए.वी. भिक्खीविण्ड ने किया बजवाड़ा में यज्ञ

गुरु नानक देव डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, भिक्खीविंड ने श्री पूनम सूरी जी (प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली) की प्रेरणा से तथा जे.पी शूर (डायरैक्टर पी एस) तथा डॉ. श्रीमती नीलम कामरा प्रधाना ए.पी.पी. उपसभा पंजाब के दिशा निर्देशन से महात्मा हंसराज जी के जन्म स्थान पर बड़ी श्रद्धा से हवन–यज्ञ किया गया। इस यज्ञ में डॉ. के .एन कौल (मैनेजर) ने यजमान का दायित्व निभाया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य श्री संजीव कोचर, स्कूल का स्टाफ तथा विद्यार्थी उपस्थित थे। हवन के पश्चात विद्यार्थियों ने भजन गाए। इस हवन में वहाँ के स्थानीय लोग भी उपस्थित थे।

डॉ. कौल ने महात्मा हंसराज के जीवन के विशेष पहलुओं के बारे में विद्यार्थियों को बताया।

उन्होंने कहा कि हमें महात्मा हंसराज के जीवन का अनुसरण करते हुए सादगी का जीवन व्यतीत करना चाहिए और यहाँ हवन करके भिक्खीविंड स्कूल ने यहाँ के स्थानीय लोगों में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। यह दिन हमें हमेशा स्मरणीय रहेगा। प्रिंसीपल संजीव कोचर ने डॉ. कौल का अपने तहे दिल से यहाँ पधारने पर आभार व्यक्त किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 01 जून, 2014 से 07 जून, 2014

निर्भय बनूँ

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यदन्ति यच्च दूरके, भयं विन्दति मामिह।
पवमान वि तज्जहि।।

ऋग् ९.६४.२१

ऋषिः **मैत्रावरुणिः वसिष्ठः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● **(यत्)** जो, **(अन्ति)** समीप, **(यत् च)** और जो, **(दूरके)** दूर, **(इह)** यहाँ, **(मां)** मुझे, **(भय)** भय, **(विन्दति)** प्राप्त करता है, **(पवमान)** हे सर्वत्र–संचारी, पवित्रकर्ता सोम प्रभु!, **(तत्)** उसे, **(वि जहि)** विनष्ट करो।

● मनुष्य प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान् होता हुआ भी सबसे अधिक भयशील है। अन्य सब पशु, पक्षी, सरीसृप, कीट, पतंग आदि जन्तु भयावह जंगलों में भी निर्भय विचरते हैं। पर मानव घर में भी भयभीत रहता है, दंश, मशक, वृश्चिक, सर्प, आधि, व्याधि, चोर, शत्रु, शासक आदि के भय से व्याकुल रहता है। ये भय आत्म–विश्वास और प्रभु–विश्वास की कमी के कारण होते हैं।

मैं भी समीप के और दूर के अनेक प्रकार के भयों से घिरा हुआ हूँ। समीप में मुझे अपने पड़ोसियों से, साथी–संगियों से, यहाँ तक कि घर के सदस्यों से भी भय लगा रहता है कि ये कहीं मेरा कुछ अनिष्ट न कर दें। अपने मन में सन्देह का बीज बोकर मैं सोचता हूँ कि कहीं ये मेरी हत्या न कर दें, मेरा धन न हड़प लें, मेरा रथ न हर लें। नींद में भी मुझे चोरों के सपने आते है। दूर जाता हूँ। दूर जाता हूँ तो वहाँ भी भय पीछा नहीं छोड़ता। सोचता हूँ कहीं रेलगाड़ी न टकरा जाए, कहीं मोटरकार आदि यान दुर्घटना–ग्रस्त न हो जाए, कहीं लुटेरे मुझे लूट न लें, कहीं मेरे दूर यात्रा पर आये होने के कारण मेरी अनुपम स्थिति में परिवार पर कोई संकट न आ जाए। ये सब तो ऐसे भय हैं, जो व्यर्थ ही मेरे शंकाशील मन को उद्विग्न किए रखते हैं; पर इनके अतिरिक्त कई भय सचमुच के भी होते हैं, जिनके भय का कारण वास्तव में उपस्थित होता है। उस समय भी मैं भय–कारणों का प्रतीकार करने के स्थान पर भयग्रस्त हुआ निष्कर्मा खड़ा रहता हूँ। मैं इतना भयशील हूँ कि मुझे सन्ध्या–वन्दन आदि सत्कर्म करते हुए भी भय व्यापे रहता है कि कहीं कोई मेरा उपहास न करे।

इन दूर के तथा समीप के सभी भयों को हे मेरे प्रभु! तुम्हीं दूर कर सकते हो। तुम्हारा सच्चा ध्यान मेरे अन्दर आत्म–संबल उत्पन्न कर सकता है। तुम 'पवमान' हो, सर्वत्र–संचारी, सर्वव्यापी और अन्तःकरण को पवित्र करनेवाले हो। तुम सर्वत्र मेरे चित्त की भय–दशा को जानकर और उससे मुझे मुक्त कर पवित्र करते रहो। हे पवित्रता के देव! तुम मेरे भयों को समूल विनष्ट कर दो, जिससे फिर कभी भय मेरे मानस को आक्रान्त न कर सके। समीप और दूर के सब स्थानों को, सब दिशाओं को, मेरे लिए निर्भय कर दो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

दो रास्ते

● महात्मा आनन्द स्वामी

बात चल रही थी कि सभी प्रेय मार्ग पर चले जा रहे हैं। महाभारत में आई ''सुन्द'' और ''उपसुन्द'' की कथा का सन्दर्भ देकर स्वामी जी ने बताया कि ब्रह्मा से वर पाकर उन दोनों राक्षसों ने दुनियाँ में आफ़त मचा दी। सारी पृथिवी पर राक्षसों का राज हो गया।

आज दुनियाँ की वही स्थिति है–खाओ, पीओ,भोगो, लूटो, गाओ, नाचो, मौज करो'। किसी एक देश की बात नहीं, सारी दुनियाँ में यही हो रहा है। जहाँ धन है वहाँ उसका सदुपयोग नहीं। अमेरिका चाँद से पत्थर तो ले आया लेकिन डेढ़ करोड़ मनुष्य भूखे मर रहें हैं उनका क्या? 'Awake' नामक पत्र के अनुसार उस समय जन संख्या में तो 9% वृद्धि हुई परन्तु अपराधों की गिनती में 62% की वृद्धि हुई और यह भी कि एक वर्ष में 21 करोड़ 50 लाख गैलन शराब पी गई, हजारों लोग मोटरों के नीचे कुचले गए और हजारों के लगभग घायल हुए।

दुकानों से 5 अरब डालर का सामान चोरी हुआ, 50 अरब का जूआ खेला गया।

अमेरिका का यह हाल अब आगे सुनिये.......

अमेरिका का यह हाल आपको इसलिए सुना रहा हूँ कि आप 'प्रेय मार्ग' पर चलने का परिणाम देख सकें। अमेरिका में उपदंश और मूत्रकृच्छ (आतशक और सोज़ाक) की गंदी बीमारियाँ निरन्तर बढ़ रही हैं। विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले नवयुवक लड़कों और लड़कियों में ये रोग फैल रहे हैं। यही पत्र यह भी लिखता है कि अमेरिका में आत्महत्याओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है। अमेरिका में मृत्यु के जो कारण हैं, उनमें आत्महत्या ग्यारहवाँ कारण है।

अमेरिका में और कई दूसरे देशों में भी किसी विशेष बात के सम्बन्ध में लोगों की राय जानने के लिए 'गैलप पोल' होते हैं– यह जानने के लिए कि अमेरिका में कितने प्रतिशत लोग धर्म से दुःखी हैं, उसे मानते नहीं और उसे व्यर्थ की वस्तु समझते हैं। 1957 में एक 'गैलप पोल' हुआ तो 14 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे धर्म से तंग हैं, उसे व्यर्थ की वस्तु समझते हैं। 1962 में एक 'गैलप पोल' हुआ तो 31 प्रतिशत ने यही बात कही। 1969 में राय जानी गई तो 45 प्रतिशत ने कहा कि इसे धर्म को नहीं मानते। वे व्यर्थ और हानिकारक समझते हैं। आज तक इस प्रतिशत में कितनी वृद्धि हुई, यह मुझे पता नहीं।

इसका तात्पर्य यह नहीं कि अमेरिका के सभी लोग नास्तिक और बुरे हैं। नहीं, अच्छे लोग भी वहाँ हैं, बहुत–से अच्छे लोग भी हैं। परन्तु जिन लोगों ने अमेरिका को स्वर्ग समझ लिया है उनको वास्तविकता से अवगत करने के लिए मैं ये बातें आपका बता रहा हूँ जो स्वयं अमेरिकन पत्रों ने लिखी हैं।

अमेरिका की जनगणना है 26 करोड। इनमें से एक वर्ष के अन्दर 13 करोड़ मनुष्य डॉक्टर के पास जाते हैं। ये डॉक्टर एक अरब नुस्खे इन रोगियों के लिए वर्षभर में लिखते हैं, क्योंकि रोगी एक ही बार तो डॉक्टर के पास जाता नहीं, कई बार जाता है। इन एक अरब नुस्खों के आधार पर साढ़े तीन अरब डॉलर की दवाइयाँ वहाँ हर वर्ष खरीदी जाती हैं।

और रिश्वत का क्या हाल है? आप लोग जहाँ शिकायत करते हैं कि भारत में रिश्वत बहुत बढ़ गई है, भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया है, यह शिकायत ठीक है। वास्तव में स्वतन्त्रता के बाद इन बातों में वृद्धि हुई है, क्योंकि यह देश एक गलत रास्ते पर चल पड़ा। परन्तु अमेरिका का हाल तो इससे कई गुणा निकृष्ट है। अमेरिका में रिश्वतखोरी का वर्णन करते हुए अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र ''रीडर्स डाइजेस्ट'' (Readers Digest) ने अपने दिसम्बर 1969 के अंक में लिखा कि केवल न्यूयॉर्क में पुलिस के बड़े–बड़े अफ़सरों में से प्रत्येक अफ़सर की प्रति मास रिश्वत से

thearyasamaj.org

जो आय होती है वह औसतन 12 हजार डॉलर है। हर महीने 12 हजार डॉलर प्रति अफ़सर यह रिश्वत इसलिए चलती है कि ये बड़े–बड़े अफ़सर डाकुओं और गुण्डों की रक्षा कर सकें। ये बड़े–बड़े अफ़सर न्यूयॉर्क में कुल कितने हैं? यह 'रीडर्स डाइजेस्ट' ने बताया नहीं। परन्तु बड़े–बड़े यदि अफ़सर रिश्वत लेते हैं तो स्पष्ट है कि छोटे भी लेते हैं। यही नहीं, अमेरिका में 'हिप्पी' नाम का एक नया जानवर जाग उठा है। ये बड़े–बड़े लखपतियों के बेटे–बेटियाँ हैं। अमीरी के विरुद्ध रीएक्शन (Reaction) उनमें जाग उठा है। अनाचार, नर–नारी के स्वातन्त्र्य और दुराचार के घोष लगाते हुए ये लोग विचित्र कपड़े पहनकर, बड़े–बड़े बाल बढ़ाकर अमेरिका और कई दूसरे देशों के लिए भी एक नई समस्या बन गए हैं। कुर्ता टाँगों में, पतलून गले में पहनकर कई प्रकार की शक्लें ये बनाते हैं। हर प्रकार के मादक द्रव्यों का ये प्रयोग करते हैं। न्यूयॉर्क के पास 'बीथे' नाम का एक स्थान है, वहाँ 1969 के अगस्त में एक 'हिप्पी मेला' हुआ। लगभग चार लाख हिप्पी लड़के–लड़कियाँ–स्त्री, पुरुष वहाँ इकट्ठे हुए। दिनभर और रातभर ये लोग मौज मनाते रहे। कोई पुलिस नहीं थी, कोई प्रबन्ध नहीं था, कोई सफाई नहीं थी, कोई मर गया तो मर गया।

एक वस्तु वहाँ निकली है। उसे 'एल.एस.डी.' (L.S.D) कहते हैं। चरस, गाँजा, अफीम, कोकीन और पता नहीं किन–किन चीजों से यह एल.एस.डी. तैयार की जाती है। मैं अमेरिका के 'डलास' नगर में था। यह वह नगर है जहाँ प्रधान कैनेडी कत्ल किये गये थे। यहाँ 'हिप्पी' लोगों का केन्द्र है। मुझे उन्होंने अपने यहाँ बुलाया। मेरे पहुँचने से पहले उन्होंने मेरे जीवन का संक्षिप्त हाल छापकर बाँट दिया। उन्हें पता था कि मैं योग, ध्यान और समाधि की बात कहता हूँ। मैं वहाँ गया तो वे बोले, ''आनन्द स्वामी, तुम समाधि के लिए इतना लम्बा–चौड़ा रास्ता बताते हो, बहुत कठिन रास्ता है। हम तुम्हें समाधि का बहुत सरल रास्ता हैं, यह देखो! यह एल.एस.डी. की गोली है, यह रास्ता है।

मैंने पूछा–'इससे क्या होता है ?''

उनमें से एक ने कहा–''एक गोली खा लो तो पूरे 24 घंटे के लिए समाधि लग जाएगी।''

मैंने पूछा – ''यदि दो गोलियाँ खा लूँ, तो?

वह बोला – ''दो दिन तक दुनिया की खबर नहीं लगेगी।''

मैंने पूछा – यदि तीन खा लूँ, तो ?''

वह बोला – ''फिर तो सदा के लिए, होश कभी आएगा नहीं।''

यह है अमेरिका का नया 'वाम मार्ग' जो अमेरिका के लिए सरदर्द बन गया है। एक अमेरिकन माता अपने पुत्र को लेकर मेरे पास आई। अच्छा–खासा सुन्दर युवक था – माँ बाप का एक ही पुत्र। माँ बहुत दुःखी थी; बोली, 'मेरा पुत्र बिगड़ गया है, बहुत होनहार था, बहुत अच्छा पढ़ता था, बुरी संगत में पड़कर एल.एस.डी. खाने लगा है। मैं बहुत दुःखी हूँ। यह घर से चला जाता है, कई–कई दिन तक वापस नहीं आता। गोलियाँ खाकर पता नहीं कहाँ पड़ा रहता है। आप इसे समझाइये।''

मैंने उस नवयुवक की ओर देखा तो वह मेरी ओर नहीं, छत की ओर देखकर बोला–

''वैरी ब्यूटीफुल! वैरी ब्यूटीफुल!'' (Very beautiful! Very beautiful!) मैंने कहा–''यह 'वैरी ब्यूटीफुल क्या है भाई?''

उसने कहा–''एल.एस.डी. वैरी ब्यूटीफुल।''

और उसने जेब से काली–सी एक गोली निकालकर कहा, ''मैं एक गोली खाता हूँ तो ईसा मसीह मुझे धरती से उठाकर चाँद तक ले जाते हैं। चाँद से भी ऊपर, सूरज से भी ऊपर, दूर... बहुत दूर।''

उसकी माँ ने बताया कि एक दिन वर्षा हो रही थी। छत का पानी बहकर नीचे रखे टब में गिरा। टब ''भर गया तो उसका बेटा टब के अन्दर जा बैठा। गोली उसने खा रखी थी; बोला– माँ! माँ! देखो, मैं आकाश पर चल रहा हूँ।''

एक ऐसे पुरुष को मैं क्या समझाऊँ! वह तो समझने–समझाने की सीमा से बाहर जा चुका था।

ये 'हिप्पी' अब भारत में भी आ रहे हैं, परन्तु जो कुछ ये करते हैं वह समाधि है नहीं, अपने–आपको धोखा देना है, नशा खाकर अपने – आपको बेहोश करना है।

परन्तु यह हाल केवल अमेरिका में ही नहीं यूरोप में, एशिया में, दूर परे सिंगापुर, मलयेशिया, थाईलैण्ड, हांगकांग, फिलिपाइन, फारमूसा, जापान और कई दूसरे देशों में भी हो रहा है।

इसका कारण केवल एक है कि दुनिया ने 'प्रेय मार्ग' को अपना लिया। क्या अमेरिका, क्या यूरोप, क्या दूसरे देश, सब जगह इसी 'प्रेय मार्ग' का पागलपन चल रहा है। अमेरिका के सम्बन्ध में जुलाई 1966 के 'रीडर्स डाइजेस्ट' में एक विद्वान् एवं विचारक ने दुःख के साथ एक लेख लिखा। मैं इस लेख के एक भाग का अनुवाद आपको सुनाता हूँ। ये सज्जन कहते हैं–

''आज इस देश को देखिए, चारों ओर ऐसा प्रतीत होता है कि सदाचार बहुत ही गिरावट की ओर जा रहा है। ईमानदारी का स्थान धोखे ने ले लिया है। कानून के लिए श्रद्धा की जगह अपराध जाग उठे हैं। हर ओर ऐसा प्रतीत होता है कि लोगों में अपराध और दुराचार के बारे में एक विचित्र सुस्ती, लापरवाही, नर्मी की भावना पैदा हो रही है। समय आ गया है कि हम सारी अवनति को इसके असली रूप में देखें और सोचें कि हमारे समाज में क्या हो रहा है? तलाकों की गिनती इतनी क्यों बढ़ रही है? अपराधों की गिनती दिन–प्रतिदिन इतनी तेजी से क्यों बढ़ रही है? पारिवारिक बन्धन और सम्बन्ध इतने शिथिल क्यों हुए जाते हैं। जातीय घृणा के उमड़ते हुए बादल एक गर्जना तूफान क्यों बने जाते हैं? स्कूलों और कॉलिजों में नौजवान लड़कों और लड़कियों के अनुचित सम्बन्धों की बाढ़ क्यों आ गई है? लोगों में शराब पीने की आदत कम होने की अपेक्षा लगातार बढ़ती क्यों जा रही है? हमारी सड़कों पर दुर्घटनाओं और उनके कारण मरनेवालों की संख्या एक भयानक सीमा तक क्यों पहुँची जाती है? आवश्यकता है कि हम सब–कुछ देखें और यह समझें कि इन सब बातों का क्या कारण है? स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में यह विचार है कि मनुष्य को प्रत्येक बात के सम्बन्ध में स्वतन्त्र होना चाहिए–सदाचार के सम्बन्ध में; अपने–आपको स्वार्थ, कमीनापन, सुस्ती और आरामतलबी के रास्ते पर चलाने में भी।''

इस लेख के लेखक थे–श्री आर्थर गार्डन। मैं नहीं जानता कि ये साहब आज कहाँ हैं, परन्तु जो कुछ उन्होंने 1966 में लिखा, आज उससे हालत अधिक बुरी है और दिन–प्रतिदिन बुरी होती जा रही है।

परन्तु जैसा मैंने कहा, यह हालत केवल अमेरिका में ही नहीं, सारी दुनिया में है, यूरोप में, एशिया में, भारत में, दक्षिण–पूर्वी एशिया में; फ़िलिपाइन में, यहाँ तक कि सोवियत रूस में भी। एक पत्र है 'सोवियत यूनियन न्यूज़वीक मैगज़ीन'। पत्र का 23 दिसम्बर 1968 को जो अंक छपा, उसमें लिखा है कि सोवियत यूनियन की सरकार अपने देश में होनेवाले अपराध–सम्बन्धी आँकड़े कभी नहीं छापती, परन्तु अन्य स्त्रोतों से मिलनेवाली सूचनाओं से पता चलता है कि रूस के अन्दर भी अपराधों की संख्या में वैसे ही वृद्धि हो रही है जैसे दूसरे औद्योगिक देशों में।

और बरतानिया की हालत क्या है? लॉर्ड शॉ–क्रॉस एक लम्बे समय तक बरतानिया के अटॉर्नी जनरल थे। वे लिखते हैं कि बरतानिया के अन्दर अपराधों की बाढ़ आ गई है और यह बाढ़ निरन्तर बढ़ती जा रही है, कम होने में नहीं आती।

इसका कारण क्या है? क्या निर्धनता, अशिक्षा, मकानों की कमी ? नहीं, बरतानिया में निर्धनता नहीं; काफी धनी लोग हैं, पढ़ाई का बहुत अच्छा प्रबन्ध है, मकानों की भी कमी नहीं।

इन सब बुराइयों का कारण है कि ये लोग 'प्रेय मार्ग' पर चल पड़े हैं। और केवल अमेरिका, बरतानिया, यूरोप ही नहीं, सारी दुनिया इसी रास्ते पर बढ़ती जा रही है।

कठोपनिषद् कहता है कि 'प्रेय मार्ग' विनाश का रास्ता है। जो बुद्धिहीन हैं, मूर्ख हैं, वे इस मार्ग को अपनाते हैं। बुद्धिमान्, सोच–समझवाले, धैर्यवाले लोग 'प्रेय मार्ग' को नहीं, 'श्रेय मार्ग' को अपनाते हैं।

मैं कहता हूँ इसका उत्तर वह दशा देती है जो वहाँ नजर आती है, वे परिणाम देते हैं जो वहाँ पैदा हो रहे हैं। वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है। 'प्रेय मार्ग' बुद्धिमत्ता और सूझबूझ का रास्ता है या मूर्खता और नासमझी का, इसका पता इसके परिणाम से लगता है। रावण ने 'प्रेय मार्ग' को अपनाया, पन्द्रह लाख वर्ष हो गए इस बात को। वह स्वयं नष्ट हुआ, उसका राज्य नष्ट हुआ, परिवार नष्ट हुआ। और आज पन्द्रह लाख वर्ष के बाद भी जगह–जगह पर उसके बुत बनाकर जलाए जाते हैं। कंस, दुर्योधन, शिशुपाल, शकुनि और जरासंध ने 'प्रेय मार्ग' को अपनाया और हजारों वर्ष बीतने पर भी लोग उनसे घृणा करते हैं। रोम के अन्दर एण्टोनी ने सुन्दर स्त्रियों से खुशी पाने का यत्न किया; खुशी उसे मिली नहीं, अपमान ज़रूर मिला। ब्रूटस ने जलसों और जलूसों में लोगों की वाह–वाह प्राप्त करने को खुशी का रास्ता समझा, और अन्त में निराश होकर आत्महत्या कर बैठा। जूलियस सीज़र ने दुनिया–भर का सम्राट बनने के लिए अपनी शक्ति व्यय कर दी और अन्त में अपने ही साथियों के हाथों नष्ट हो गया। सिकन्दर ने भी यही किया और अन्त में रोता हुआ इस दुनिया से चला गया। किस–किसका नाम लेंगे हम! चंगेज खाँ, नादिरशाह, तैमूरलंग, हिटलर, मुसोलिनी, टोजो–सब अन्त में नष्ट हुए, सबका नाम घृणा से लिया जाता है।

ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि ये लोग 'प्रेय मार्ग' पर चले। अब बताओ, 'प्रेय मार्ग' पर चलना मूर्खता और नासमझी की बात है या नहीं? जिसका परिणाम बुरा है वह रास्ता अच्छा नहीं। जो इस रास्ते पर चलता है वह निश्चय ही बुद्धिमान् और समझवाला नहीं।

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

जीवन लक्ष्य की प्राप्ति में आत्म-ज्ञान की आवश्यकता

● आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

इस संसार में मानव-जीवन सर्वश्रेष्ठ है। मानव-जीवन का चरम लक्ष्य अत्यन्त दुःखों से छुटकारा पाना, **आत्म-ज्ञान** प्राप्त करना, प्रभु की निकटता प्राप्त करते हुए **'मोक्ष'** प्राप्त करना है। उपनिषद् का सन्देश है-

''न चेद् इह अवेदीन् महती विनष्टिः''

अर्थात् यदि इस इन्सान ने मानव-जीवन पाकर भी अपने को, आत्मा को और परमात्मा को नहीं जाना, तो निश्चय ही बड़ी हानि है। इसलिए लक्ष्य प्राप्ति में आत्म-ज्ञान की महती आवश्यकता है।

वर्तमान में इन्सान को धन से और शरीर से अधिक प्यार है। आत्मा से प्यार नहीं-

आज के इस युग में इन्सान अपने मुख्य लक्ष्य से भटक गया है। सांसारिक चमक-दमक में भटक रहा है। आज के इन्सान की अधिकतर भाग-दौड़ धन के लिए है, शरीर के लिए है, आत्म-ज्ञान के लिए नहीं जबकि यह सत्यता है कि, आत्मा के संयोग से ही शरीर में चेतनता व पवित्रता है। इसके न रहने पर शरीर में बदबू व विकृति आने लगती है। शरीर का चेतन-तत्त्व निकल जाने के कारण शरीर 'जड़' हो जाता है। 'मृत' बन जाता है। इस विषय की पुष्टि में आर्य जगत् के वैदिक विद्वान् डॉ. महेश विद्यालंकार जी के विचारों को ग्रहण कर, उन्हें महत्त्व प्रदान किया गया है।

शरीर में आत्मा ही मुख्य तत्त्व है-

आत्मा ही शरीर को गति देता है। इस आत्म तत्त्व की शक्ति सभी को माननी पड़ती है क्योंकि शरीर का आधार आत्मा ही है। आत्मा से ही जीवन का महत्त्व, आकर्षण और विशेषता है। वेदों में आत्मा का अनेक प्रकार से वर्णन है-

परीत्य भूतानि परित्य लोकान्
परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्य,
आत्मनात्मानमभि संविवेश।।

यजुर्वेद अ. 32, मन्त्र 11

अर्थात् **(भूतानि परीत्य)** यह जीवात्मा चाहे अनेक योनियों में घूमने वाला है। **(लोकान् परीत्य)** नाना लोकों में विचरण करता है। **(सर्वाः दिशः प्रदिशश्च परीत्य)** सब दिशाओं, प्रदिशाओं में घूमता है। **(ऋतस्य प्रथमजाम् अमृतस्य उपस्थाय)** सत्यस्वरूप वेदवाणी की अमृत रूपी ज्ञान की किरण को प्राप्त करके **(आत्मनात्मानमभि संविवेश)** यह पवित्रात्मा परमात्मा का साक्षात्कार कर लेता है।

न जाने कब से जीव अपने प्यारे प्रभु से अलग हुआ है और अनेक योनियों में अनेक बार जन्म धारण किया है। परमात्मा ने इस आत्मा को अनेक बार पापरूप कुकर्मों के कारण पापयोनियों, दुःखों, कष्टों एवं अनेक प्रकार के रोगों में डालकर दण्ड भी दिया है फिर भी सुधर नहीं सका। आद्य शंकराचार्य जी का यह कथन सत्य है-

पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्,
पुनरपि जननी-जठरे शयनम्।।

अर्थात् बार-बार जन्म लेना, पुनः मृत्यु को प्राप्त होना, फिर आना, फिर घर-गृहस्थी बसाना, फिर चले जाना, यही क्रम अनेक जन्मों से चल रहा है। जब तक यह मनुष्य आत्म-ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेगा तब तक मृत्यु के चक्र और भटकन से छूट नहीं पायेगा। इसलिए उपनिषद् पुकार कर कह रही है- **''आत्मनं विद्धि''**

जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आत्मज्ञान प्राप्त करो। तभी उद्धार होगा। आत्मा को जानो। आत्मा बोध करके ही परमात्मा का बोध होगा। बिना अपने स्वरूप को जाने, परमात्मा तक नहीं पहुंचा जा सकता।

जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आत्मज्ञान प्राप्त करो। तभी उद्धार होगा। आत्मा को जानो। आत्मा बोध करके ही परमात्मा का बोध होगा। बिना अपने स्वरूप को जाने, परमात्मा तक नहीं पहुंचा जा सकता।

जीवात्मा का स्वरूप कैसा है?

न्याय दर्शन के रचनाकार महर्षि गौतम के अनुसार 'जीवात्मा' को सुन्दर पहचान दी गई है-

''इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम्''।

(न्याय दर्शन 1-2-10)

अर्थात् आत्मा उसे जानना चाहिए जहाँ इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान-प्राप्त करने की लालसा हो। मनुष्य का शरीर तो जड़ है किन्तु आत्मा चेतन है।

(आत्मनो लिंगम्) इस सूत्र में ऋषि ने आत्मा की छः पहचान बतलायी हैं।

1. इच्छा-

यह जीवात्मा नाना प्रकार की इच्छायें प्रकट करता रहता है। इच्छायें रखना कोई बुरी बात नहीं है। इच्छायें शुभ होनी चाहिए। जैसे - मानव-जीवन 'मोक्ष' प्राप्त करने के लिए मिला है। दुःखों से छुटकारा मिले। महात्मा भर्तृहरि जी के अनुसार अधिक 'तृष्णा' नहीं होनी चाहिए। अधिक तृष्णा में लोभ-लालच आ जाता है।

''तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा''

तृष्णायें कभी समाप्त नहीं होतीं। तृष्णा, लोभ, लालच मनुष्य को कमजोर बना देते हैं। मानव अधिक इच्छायें पालने से अपने मुख्य लक्ष्य से भटक जाता है। पापी बन जाता है। पतन की ओर गति करने लगता है। अपने जीवन-लक्ष्य को भूल जाता है।

2. द्वेष-

जीवात्मा की दूसरी पहचान है- वह अपने से अधिक गुणवान्, धनवान्, ज्ञानी, बलवान् व्यक्तियों से ईर्ष्या, द्वेष करता है। ईर्ष्यालु होना, द्वेष करना अच्छी बात नहीं है। पशु-पक्षी भी इस द्वेष के कारण आपस में लड़ते, झगड़ते देखे गये हैं। यह जीवात्मा की बहुत बड़ी दुर्बलता है। कमजोरी है। भगवान हमें द्वेष से, ईर्ष्या से दूर रहने की प्रेरणा देते हैं।

'सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमत्रि हर्यत्र वत्सं जातम
इवाघ्न्या।।

(अथर्ववेद काण्ड 3-अनुवाक् 30 मन्त्र-1)

भगवान अथर्ववेद के माध्यम से हमें आपस में प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश करते हैं। ईर्ष्या-द्वेष को छोड़ने की प्रेरणा देते हैं। ईर्ष्या-द्वेष लक्ष्य प्राप्ति में बाधक है।

3. प्रयत्न-

आत्मा की तीसरी पहचान है कि यह जीवात्मा नाना प्रकार के पुरुषार्थ करके, योग-मार्ग का पथिक बनता है। 'मोक्ष' प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करता है। भक्ति के मार्ग को अपनाता है। कर्मशील बनता है। अपने कर्त्तव्य-कर्मो से लक्ष्य-प्राप्ति की ओर आगे बढ़ता रहता है। आलस्य, प्रमाद जैसे अवगुणों का त्याग करता है। तब कहीं जाकर उसका प्रयत्न सफल होता है।

4. सुख-

जीवात्मा की चौथी पहचान है कि वह अपने जीवन को सुखी, शान्तिमय, आनन्दमय बनाने का प्रयास करता है। मनुष्य का जीवन सुखी होना भी चाहिये। वेदों में अनेकों मन्त्रों में सुखी जीवन के लिए प्रार्थना की गई है।

5. दुःख -

आत्मा की पाँचवी पहचान है-कभी यह जीवात्मा दुःखों का अनुभव करता है। यह अनेक प्रकार से बीमार पड़ जाता है, कभी अभाव ग्रस्त होता है। कभी किसी के अत्याचार का शिकार होता है। कभी गरीबी की मार झेलता है। कभी बुढ़ापा आ जाता है। कभी जन्म लेता है और कभी मृत्यु रूपी दुःख प्राप्त करता है। इसीलिए गुरुनानक देव जी कहते हैं- **''नानक दुखिया सब संसार''** यह संसार दुःखों से, कष्टों से भरा पड़ा है। अत्यन्त दुःखों से छुटकारा प्राप्त करना ही मानव-जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है।

6. ज्ञानानि आत्मनो लिंगम्-

आत्मा की छठी पहचान है ज्ञानी बनना। ज्ञान आत्मा का नेत्र कहलाता है। अज्ञान के कारण आत्मा मोह-ममता में बंधकर जन्म-मरण के चक्कर में दुःख भोगता है। विद्वान् लोग कहते हैं कि **''ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः''** बिना सत्य ज्ञान के व्यक्ति दुःखों, से कष्टों से, समस्याओं से, उलझनों से, बन्धनों से नहीं छूट सकता है। सत्य-ज्ञान ही आत्मा को परमात्मा के नजदीक ले जाता है। सच्चे ज्ञान के बिना मानव अधर्म, पाप, गुरुडम, प्रदर्शन, ढोंग एवं पाखण्ड में फँसता चला जाता है। सत्य ज्ञान ही मनुष्य को जीवन-लक्ष्य एवं सन्मार्ग दिखाता है।

आत्म-ज्ञान से ही सब कुछ जाना जाता है-

बृहदारण्यक उपनिषद् में महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा मैत्रेयी को आत्मा के दर्शन, मनन तथा चिन्तन का सुन्दर उपदेश दिया है-

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तवयो
निधि ध्यासितव्यो मैत्रेयि!
आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रेवनेन मत्या
विज्ञानेनेदं सर्व विदितम्।।

-बृहदारण्यकोपनिषद् 2-4-5

अर्थात् अरे मैत्रेयी! मनुष्य को अपने पूरे पुरुषार्थ के साथ आत्मा का साक्षात्कार करना चाहिए। उसके विषय में ही श्रवण, मनन और चिन्तन करना चाहिए क्योंकि आत्म-ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य सब कुछ जान सकता है। अतः आत्मज्ञान परमावश्यक है- बिना आत्मज्ञान के यह जीवात्मा जीवन-लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है।

म.नं. 44, IInd फ्लोर,
फेस-2 B ब्लाक, विकास नगर,
नई दिल्ली-59 मो. 9250906201

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शं 8. शंका–इन्द्रियों के सुखों के सुखों को भोगकर उनसे तृप्त होना अच्छा है, दमन (सप्रेशन) करना अच्छा नहीं, ओशो, फ्रायड ने ऐसी बातें कही हैं। क्या सही है?

समाधान – हम कहते हैं–ओशो, फ्रायड आदि का यह कहना गलत है। कारण कि :

सारी दुनिया भोगों को भोग कर इन्द्रियों को तृप्त करने की कोशिश कर रही है। सारी दुनिया यही तो कर रही है। और क्या कर रही है? सुखों को भोगकर क्या किसी की तृप्ति हो गयी? क्या सुख से मन पूरी तरह भर गया?

क्या यह हमारा पहला जन्म है ? पहले कितने ही जन्म हो गए। पिछले जन्मों में हमने और क्या किया? यही तो किया, खाया–पिया और भोगा। पिछले सैकड़ों–हज़ारों जन्मों से आज तक तो तृप्ति हुई नहीं। आगे और दो सौ, पाँच सौ, हजार जन्म ले लो, और भोग लो भोगों को, क्या तृप्ति हो जायेगी? नहीं, इसलिए ओशो, फ्रायड की बात गलत है।

ऋषि लोग और मैं भी यही कहता हूँ कि – ''भोगों को भोगने से इच्छाएं शांत नहीं होतीं बल्कि और भड़कती हैं, और बढ़ती जाती हैं।'' इसलिए इन लोगों का कहना ठीक नहीं है। यह ऋषियों के, वेद के मनोविज्ञान के विरुद्ध है। हाँ, अगर कोई परीक्षा की दृष्टि से विषयों का सेवन करे, तो अलग बात है।

सुख–भोग के दो दृष्टिकोण हैं। एक होता है – अंधाधुंध सुख भोगना, यह मानकर भोगना कि विषयों में बहुत सुख है। इस भावना से कभी भी तृप्ति (संतुष्टि) नहीं होगी। और दूसरी पद्धति यह है कि विषयों का परीक्षण किया जाए कि–इनमें कितना सुख है। इन विषयों के भोग से तृप्ति होती है कि नहीं होती?

अगर कोई परीक्षण करने की दृष्टि से विषयों का सेवन करे, तो उसको 'सत्य' समझ में आ जाएगा। तब तो सुख का भोग करने में लाभ है। दो बार, पाँच बार, पच्चीस बार, पचास बार परीक्षण करेगा और उसको समझ में आ जाएगा कि इनमें तृप्ति नहीं है। इस दृष्टि से तो भोग कर सकते हैं। इसमें आपत्ति नहीं है, पर जैसा कि यहाँ प्रश्न में लिखा है, वो पद्धति ठीक नहीं है। ऐसे कोई तृप्ति नहीं होती।

9. शंका–मानव तो उन्नति कर रहा है, अतः भगवान को तो खुश होना चाहिए?

समाधान – आज जो हो रहा है, वह उन्नति नहीं है।

उन्नति की सही परिभाषा है कि :– ''जिससे लौकिक सुख बढ़े, दुःख–तनाव कम हो, और 'मोक्ष' की सिद्धि (प्राप्ति) हो, वह उन्नति है।

आधिभौतिक उन्नति वहाँ तक करो, जहाँ तक मोक्ष प्राप्ति में सहायता मिले। जो ऐश्वर्य और मोह–माया आपको मोक्ष तक जाने से ही रोक दे, वह उन्नति नहीं है। ऐश्वर्य उतना ही बढ़ना चाहिए, जितना कि वह मोक्ष प्राप्ति में सहायता हो, और संसार को सुचारु रूप से चला सकने में समर्थ हो।

आज तो ऐसा देखने में नहीं आ रहा। आज तो सम्पत्ति से लोगों का सुख नहीं बढ़ रहा। दुःख–तनाव, असंतोष, अशांति एवं अपराध ही बढ रहे हैं।

यह स्थिति मोक्ष–प्राप्ति में भी सहायक नहीं है। इसलिए आज की स्थिति को हम 'उन्नति' नहीं कह सकते।

स्वामी दयानंद जी ने कहा कि – ''जब ऐश्वर्य मात्रा से अधिक बढ़ता है, तो मनुष्य में प्रमाद और आलस्य आदि दोष उत्पन्न होते हैं।'' महाभारत युद्ध का कारण भी यही था। उस समय शक्ति और ऐश्वर्य अधिक बढ़ गया था। इसलिए युद्ध हुआ। महाभारत युद्ध का परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं। अतः अधाधुंध धन बढ़ाते जाना उन्नति नहीं है।

महान विदुषी सावित्री

● डॉ. अशोक आर्य

प्राचीन काल की बात है कि मद्रदेश के राजा अश्वपति तथा उनकी पत्नी महारानी मालवी बड़े ही धर्म परायण, विद्वानों का सत्कार करने वाले सत्यनिष्ठ, जितेन्द्रिय, दानप्रिय जन–जन के हृदय पर शासन करने वाले क्षमाशील तथा सब प्राणियों के हितैषी थे। उन्होंने वेद के सावित्री मन्त्र द्वारा यज्ञ किया, जिसके परिणाम स्वरूप महारानी मालवी ने एक सुन्दर सुशील कन्या को जन्म दिया। सावित्री यज्ञ के कारण इस कन्या का जन्म हुआ, इस कारण इस कन्या का नाम भी सावित्री रखा गया।

बालिका सावित्री एक राजा की पुत्री थी इस कारण उसका राजसी लालन पालन हुआ तथा उसे उत्तम शिक्षा देने की व्यवस्था की गई। कुशाग्रबुद्धि सावित्री जिस पाठ को एक बार सुन लेती, वह उसे कण्ठस्थ कर लेती। इस प्रकार अल्पकाल में ही उच्च शिक्षा की ज्योति अपने अन्दर जला पाने में सफल हो गई। अब वह रूपवती, सुशील, सुशिक्षित युवती का रूप ले चुकी थी।

बेटी सुशील, गुणवती थी ही। वह जब कभी भी कोई भी कोई निर्णय लेती तो अति उत्तम ही लेती थी, इस कारण राजा को उस की निर्णय शक्ति तथा सूझ पर पूरा विश्वास था। अपनी बेटी को विवाह योग्य आयु में देखकर राजा अश्वपति को उसके विवाह की चिन्ता सताने लगी। अनेक स्थानों से, अनेक लोगों से सम्पर्क किया किन्तु उसे अपनी बेटी के जीवन साथी स्वरुप कोई उपयुक्त युवक न मिल रहा था। इधर सावित्री की आयु भी दिन प्रतिदिन बढ़ रही थी। राजा ने निर्णय लिया कि सावित्री स्वयं वर को चुने, स्वयंवर का निर्धारण करे तथा अपना जीवन साथी आप ही खोजे।

सावित्री के लिए स्वयंवर का निर्णय करके राजा ने बेटी को अपने पास बुलाकर कहा कि बेटी तू बड़ी समझदार और सूझ वाली है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि तू अपने पति को स्वयं ही खोज। राजा ने सावित्री के साथ अपने बूढ़े मन्त्रीगण को कर दिया तथा उनके साथ सावित्री देश–प्रदेश में अपने लिए उपयुक्त वर की खेज में निकल पड़ी।

सावित्री अपने इस दल के साथ देश भर में घूमी। नदियाँ, नाले, जंगल, पर्वत, तीर्थ, आदि, सब प्रकार के क्षेत्रों में गई तथा सब प्रकार के लोगों को देखा परखा तथा कुछ समय के पश्चात वह स्वदेश लौट आई। पिता के पूछने पर उसने बताया कि मैंने एक जंगल में एक तपस्वी का पुत्र देखा है, जिसका नाम सत्यवान है। वह राजा द्युम्तसेन तथा रानी शैव्या का पुत्र है। द्युम्तसेना आँखों से अन्धा है तथा उसका राज्य किसी शत्रु ने छीन लिया है। इस कारण ही वह तपस्वी बन कर जंगल में निवास कर रहा है। उसका बालक यह सत्यवान बड़ा तेजस्वी, पराक्रमी, बुद्धिमान वीर, क्षमाशील, विद्वान, सत्यवादी, उदार, प्रियदर्शी, मृदुभाषी है। उसमें किसी के प्रति इर्ष्या, द्वेष नहीं है, सब प्रकार की लज्जा से विहीन है तथा उच्चकोटि के तप व शील का स्वामी है। इस प्रकार के गुणों के भण्डार इस सत्यवान में ही वह अपने होने वाले वर का रुप देखती है।

सावित्री ने आगे बताया कि यद्यपि यह युवक पूर्ण रूप से स्वस्थ और सुन्दर है किन्तु बताया गया है कि उसमें कुछ ऐसे दोष भी हैं कि जिसके कारण वह दीर्घ जीवी नहीं होगा। बस यही एक मात्र उसमें कमी है। किन्तु अल्पजीवी एसे पति को पाकर भी वह प्रसन्न होगी, इस कारण वह उसे ही अपना वर बनाना पसन्द करेगी। सावित्री की बातें सुनकर राजा अश्वपति तथा रानी मालवी को बहुत चिन्ता हुई। वह उसका अल्पायु में ही विधवा रुप नहीं देखना चाहते थे। किन्तु वह अपनी सूझवाली बेटी के निर्णय पर गर्व करते थे कि उसने जिसे अपना वर चुना है, वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व का धनी है। इस लिए उन्होंने अपनी सुपुत्री के निर्णय को स्वीकार कर लिया तथा बड़े ही आदर सत्कार के साथ सत्यवान के हाथ में सौंपना स्वीकार कर लिया। बेटी के माता पिता कभी अहंकारी नहीं होते। यदि बेटी के माता–पिता अंहकारी होते हैं तो उसका जीवन ही नष्ट हो जाता है। वह राजा द्युम्तसेन से पहले से ही परिचित थे किन्तु बेटी के पिता होने के कारण वह उसे राज्य विहीन होने पर भी अपने से बड़ा मानते थे। इस कारण वह विद्वान ब्राह्मणों व अपने मन्त्रीगण सहित उस जंगल की ओर चल दिए, जहाँ सत्यवान अपने माता–पिता के साथ एक कुटिया बना कर रह रहे थे।

राजा अश्वपति निर्वासित राजा द्युत्तसेन की कुटिया में गए तथा उन्हें अपनी बेटी के निर्णय से अवगत कराया। राजा द्युम्तसेन आगन्तुक राजा की बात सुनकर प्रसन्नता से भर उठे किन्तु एक क्षण में ही उनका चेहरा मुरझा गया। वह जानते थे कि सावित्री एक राजकन्या है। उसने राजाओं के सुख वैभद का जीवन प्राप्त किया है। खूब आनन्द से मौज मस्ती की है, जो इस जंगल में, घास फूँस की झोंपड़ी में रह कर तथा फल–फूल से उदर पूर्ति करने वाले हम उसे नहीं दे सकेंगे। यह विचार आते ही उन्होंने अपनी व्यवस्था राजा अश्वपति के सम्मुख रखते हुए कहा

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

शराब (अल्कोहल) एक विष है

● आचार्य सत्यानन्द 'नैष्ठिक'

शराब तुरन्त मार देने वाले विषों से भी भयंकर विष है क्योंकि उन विषों से मनुष्य डरकर बचता है और वे खाये जाने पर शीघ्र ही मृत्यु की गोद में सुला देते हैं। किन्तु शराब रूपी विष को मनुष्य लाभकारी होने की भ्रान्ति में पीता है और यह विष उसको कभी पागल, कभी बीमार बनाके तिल–तिल करके तड़पा–तड़पा कर मारता है।

संसार की सभी शराबें अल्कोहल के मिश्रण से बनती हैं। अल्कोहल एक विष है, इसीलिए सभी शराबें विष हैं। सब शराबों में नशा करने वाला तत्त्व 'अल्कोहल' ही है और इसका पूरा नाम है–'इथाइल अल्कोल'। अल्कोहल की मात्रा के अनुसार शराब का नाम बदल जाता है। जिस शराब में अल्कोहल की जितनी अधिक मात्रा होती है, वह शराब उतनी ही अधिक नशीली और विषैली होती है।

सबसे हल्की शरबा 'बीयर' में अल्कोहल की मात्रा 5 से 10 प्रतिशत होती है। दवा के रूप में प्रयुक्त होने वाले कुछ आयुर्वेदिक आसवों में 7 से 15 प्रतिशत तक अल्कोहल होता है। व्हिस्की और ब्रांडी में 40 से 56 प्रतिशत और ऐबसिन्थी में 72 प्रतिशत तक अल्कोहल होता है। मेथिलेटिड स्पिरिट में 99 प्रतिशत अल्कोहल होता है, किन्तु उसमें विष मिला रहता है, जिससे उसे पिया न जा सके। जो पीता है तो उसकी मृत्यु हो जाती है।

अल्कोहल – शराब बनाने के लिए पहले अनाज, गुड़, चीनी, अंगूर, ताड़ के रस आदि को सड़ाया जाता है। फिर उस सड़े हुए पदार्थ को आग पर उबालकर वाष्प (भाप) बनाया जाता है। इस भाप को एक नली द्वारा दूसरे बर्तन में इकट्ठा कर ठंडा किया जाता है। यही अल्कोहल है। यह एक रंगहीन तरल पदार्थ होता है। इसमें एक प्रकार की गन्ध आती है जो अच्छी नहीं लगती शुद्ध अल्कोहल को यदि आग से छुआ दियाजाये तो तुरन्त जलने लगता है। इसका स्वाद भी अच्छा नहीं होता। इसलिए इसमें रंग, गन्ध, मसाले आदि मिलाकर इसे पीने लायक बनाया जाता है। बस, यही बन जाती है–'शराब'–एक कसैला, विषैला, नशीला पेय। एक विष–धीमा भी, तीव्र भी, जो आग के समान शरीर के अंगों को जला डालता है।

शराब अथवा अल्कोहल मनुष्य का भोजन या पेयपदार्थ नहीं है, क्योंकि भोजन या पेय पदार्थ वही कहला सकता है जो शरीर का पोषण करे, नसों को पुष्ट करें, मांस को बढ़ाये और शक्ति उत्पन्न करे। लेकिन विष में ये गुण नहीं होते। भोजन जीवन देता है, विष जीवन लेता है। डॉक्टर लेथवे ने विष की परिभाषा इस प्रकार की है–"जो पदार्थ जीवित शरीर की नसों की चेतन शक्ति को नष्ट करता है अथवा जीवन का ह्रास करता है वह विष है।" इस प्रकार शराब भी विष है। उसके और उसके मुख्य घटक अल्कोहल के विषैले प्रभाव इस प्रकार हैं–

1. नशा मस्तिष्क में उत्तेजना और व्याकुलता उत्पन्न करता है, मस्तिष्क के विकास को रोकता है, ज्ञान तन्तुओं को संकुचित करता है।

2. नशों और पुट्ठों की छोटी सेलों को नष्ट करके उनका बढ़ना रोक देता है।

3. ऑक्सीजन के प्रचरण को रोकता है जिससे चरबी बढ़ने लगती है।

डॉ. ऑब्रे लेविस का मत– ऐलोपैथिक चिकित्सा की एक प्रसिद्ध पुस्तक है–प्राइस की "टेक्स्ट बुक ऑफ दि प्रैक्टिस ऑफ मेडिसिन"। इस पुस्तक को अनेक प्रामाणिक डॉक्टरों ने मिलकर लिखा है और इसका सम्पादन डोनाल्ड हंटर ने किया है। इस पुस्तक के अन्तिम अध्याय में डॉक्टर ऑब्रे लेविस ने लिखा है–

"शराब एक ऐसा विष है, जिसे समाज बुरा नहीं मानता, जिसे लोग हानि रहित समझ बैठते हैं; (जो बहुत आसानी से प्राप्त हो जाता है। इसलिए ऐसे लोग, जो जीवन में किसी भी कारण असन्तुष्ट या हताश होते हैं, वे इसका अत्यधिक मात्रा में सेवन करते हैं इसका परिणाम यह होता है कि जिन कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए वे शराब पीते हैं, वे शराब पीने से घटती नहीं, उल्टा और बढ़ जाती है।"

अल्कोहल के विष होने का सबसे मुख्य प्रमाण तो यह है कि वह मारता है। अल्कोहल पर आज तक जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं, वे सभी इसे विष सिद्ध करती हैं। ब्रिटिश मेडिकल एसोसियेशन के सम्मुख अपना निबन्ध पढ़ते हुए डॉक्टर आर्चडाल रेड ने कहा था कि मेरी दूसरी तजवीज यह है कि अल्कोहल एक विष है और इससे प्रति वर्ष अनेक मृत्यु होती हैं, मुझे आशा है कि मेरी इस तजवीज पर वाद–विवाद नहीं किया जायेगा, क्योंकि सभी व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में इसका अनुभव करते हैं। बीमा कम्पनियों ने इसके आंकड़े भी दिये हैं। मैं तो एक ही बात दोहराऊंगा कि जो अधिक सुरापान करते हैं वे अधिक विष पीते हैं।"

डॉक्टर एवर्ट, सीनियर फिजिशियन एट सेन्ट जार्ज होस्पिटल, ने अपने भाषण में कहा था कि "अल्कोहल का नाम उन विषों में सबसे पहले दर्ज है जिन्हें जनता अधिक–से–अधिक खा–पी सकती है।" डॉक्टर प्रोफेसर सिम्वुड हैड स्पष्ट कहते हैं कि "मैं बहुत काल से इस बात का अनुभव करता आया हूं कि अल्कोहल केवल शारीरिक विष ही नहीं है बल्कि वह रोग–उपचार में जब अन्य औपचारिक विषों के साथ दिया जाता है तब वह उन सब विषों के प्राकृतिक गुणों को नष्ट कर डालता है और उन्हें और भी अधिक कातिल विष बनाकर रोगी को स्वस्थ करने में बाधा डालता है।

शराब या अल्कोहल के विषैले प्रभाव पर वैज्ञानिक प्रयोग – (मद्य–निषेध–चन्द्रसेन, पृ.40–41) डॉक्टरों ने शराबके विषैले प्रभाव को वैज्ञानिक परीक्षणों से भली–भांति जांचा है। और सिद्ध किया है कि उसका शरीर तथा शरीरांगों पर विषैला दुष्प्रभाव पड़ता है। कुछ प्रयोगों के निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

(क) इस प्रयोग को आप स्वयं करके देख सकते हैं। चार ट्यूबों में बराबर कच्चे अंडे की सफेदी डालिए। एक ट्यूब में नाइट्रिक एसिड और दूसरी में कार्बोलिक एसिड, तीसरी में कैरोसिव सब्लिमेट और चौथी में अल्कोहल भरिए। सबको हिला–हिलाकर रख दें। थोड़ी देर बाद देखोगे कि सबमें अंडे की सफेदी एक ही तरह से जम गई है। यद्यपि चारों पदार्थ भिन्न–भिन्न गुणों वाले हैं परन्तु सबका रासायनिक प्रभाव एक है। इससे यह सिद्ध हुआ कि अल्कोहल भी शेष तीनों जैसे गुण रखती है। ये तीनों चीजें विष हैं। इसलिए अल्कोहल भी विष हुई। पौधों और पशु–पक्षियों पर अल्कोहल के अनेक प्रयोग करके देखे गये हैं और बराबर यह प्रमाणित हुआ कि अल्कोहल विष है।

(ख) अमेरिका के एक डॉक्टर ने शराब या अल्कोहल को निम्न प्रयोग द्वारा विष सिद्ध कर दिखाया है। डॉक्टर सर बी. डब्ल्यू. रिचर्डसन ने एक बार मडूसा मछली पर यह प्रयोग किया। क्यूगार्डन्स के तालाब विक्टोरिया रेजिया में पानी का टेम्प्रेचर 80 डिग्री फारेनहाइट रखा जाता है, उसमें मडूसा मछली पलती है। पानी के दो बर्तन लिए गए, प्रत्येक में 1000 ग्रेन तालाब का पानी भरा गया। एक बर्तन में एक ग्रेन अल्कोहल डालकर अच्छी तरह मिला दी गई। फिर दोनों में एक–एक मडूसा मछली डाली गई। अल्कोहल का तत्काल प्रभाव देखने में आया, दो मिनट में ही मछली की हरकतें जो एक मिनट में 74 गिनी गई थीं बन्द हो गई, और वह नीचे बैठती गई। वह बहुत सिकुड़ गई थी। पांच मिनट के बाद वह बिल्कुल पेंदी में गिर पड़ी और जड़वत् हो गई। इसे तुरन्त निकालकर, एक दूसरे बर्तन में जिसमें खाली टैंक का पानी भरा था, डाला गया और 24 घंटे तक उसी में पड़ी रहने दी गई, पर वह अच्छी नहीं हुई। जबकि दूसरे बर्तन वाली मछली बराबर एक–सी हरकत करती और खेलती रही। इससे यह प्रमाणित हुआ कि 1000वें पानी में अल्कोहल का 1वां भाग भी जीवन के लिए कितना भयानक है। डॉक्टर रिचर्डसन कहते हैं कि मडूसा पर यह प्रयोग मैंने अनेक प्रकार से करके देखा, मनुष्यों पर भी करके देखा, प्रत्येक अवस्था में अल्कोहल का विषैला प्रभाव हुआ। (मद्य–निषेध–चन्द्रसेन, पृ.40–41)

(ग) वृक्ष–वनस्पतियों पर किये गये प्रयोगों ने भी अल्कोहल को विष सिद्ध किया है। डॉक्टर जे.जे. रेजे ने वनस्पतियों पर अल्कोहल के प्रयोग किये थे। उन्होंने बीजों को अल्कोहल और पानी के समीप रखा और धूप, रोशनी तथा खाद की एक–सी व्यवस्था की। परन्तु अल्कोहल ने उन्हें पनपने नहीं दिया, अधिक अल्कोहल के कारण वे मर गये। डॉक्टर एफ.डब्ल्यू. डेवल्यन ने प्याज पर प्रयोग करके देखा। उन्होंने प्याज को पानी और अल्कोहल दोनों में मिलाकर बोया। अल्कोहल ने प्याज को बढ़ने नहीं दिया। जब अल्कोहल अधिक डाली गई तो प्याज बिल्कुल ही मर गई। आलू और गेहूं पर भी इसी प्रकार के प्रयोग किये गये और सबका एक ही परिणाम रहा। सड़न में से जो 14 प्रतिशत से अधिक अल्कोहल उत्पन्न नहीं होता, सो भी इसी कारण से, क्योंकि जब 14 प्रतिशत अल्कोहल बन चुकता है तब वह फेनों की सेलों को मार देता है। (मद्य–निषेध–चन्द्रसेन, पृ.40–41)

"प्रसिद्ध डॉ. एमिल ब्रोगन ने अपनी पुस्तक 'टौक्सीलौजी ऑफ एल्कोहल' में लिखा है कि किसी अन्य जहर से उतनी मौतें नहीं होतीं व उतने शारीरिक व मानसिक रोग नहीं पनपते जितने मदिरा से होते हैं। यह वह खतरनाक जहर है जो शरीर के हर ऊतक पर दुष्प्रभाव डालता है।" मादक पदार्थव धूम्रपान–गोपीनाथ अग्रवाल, पृ. 12

"दस राजकीय आयोगों में अपनी सेवा अर्पित करने वाले श्री थौमस हैनरी हक्सले के अनुसार संखिया जो एक दम मृत्यु देता है, उससे मरना, मदिरा के द्वारा मरने से अच्छा है, क्योंकि वह मदिरा की भांति शारीरिक व नैतिक पतन की ओर तो नहीं ले जाता।" ("Simple enough. Arsenic is safer, less likely to lead to physical and

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

और मेरी आँखों में आँसू आ गए

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

(एक बालबन्दी की अपराध कथा)

मैं प्रायः चार–पाँच वर्षों से कारगारों में जा रहा हूँ। मैं बाल बन्दियों को अध्यात्म उन्नति सम्बन्धी वेद मंत्र, प्रार्थना, नैतिक शिक्षा तथा हिन्दी–संस्कृत का ज्ञान कराता हूँ। यह हो सकता है कि वे मेरा पढ़ाया भूल जाए परन्तु कई बार वे ही मुझे ऐसा अमिट पाठ पढ़ाते हैं। जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। परसों की ही बात है, मेरे आदेश पर सभी बन्दी कम्बलों पर बैठ कर प्रणव ध्वनि (ओ३म्) के उपरान्त गायत्री मंत्र का उच्चारण कर रहे थे। सबके नेत्र बन्द थे। मैंने भी पल भर अपनी आँखें खोलकर देखा कि एक बालबन्दी जिसकी आयु 17–18 के लगभग रही होगी, वह अपने आगे बैठे हुए एक बालबन्दी की पीठ को गुदगुदा रहा था, तथा उसकी प्रार्थना में बाधा डाल रहा था। गायत्री मंत्र के उच्चारण के उपरान्त मैंने उससे प्रश्न किया : 'मोहन (कल्पित नाम) तुम शरारत क्यों कर रहे थे, तुम्हारा प्रार्थना में मन क्यों नहीं लग रहा था ?'

"मास्टर जी, जिसने अब तक दूसरों की जेबें काटी हों, उसका प्रार्थना में मन कैसे लगेगा।" उसने सहजता से कहा।

"क्या तुम सचमुच ऐसा करते आए हो ?"

"तो क्या मैं जेल घूमने आया हूँ ?"

मैंने उसकी बात का बुरा न मानते हुए उत्सुकता वश पूछा, "क्या तुम अपनी अब तक की कहानी सुना सकते हो ?"

"मास्टर जी, अपनी कहानी सुनाकर आपका भला होगा या मेरा ?"

"दोनों का, तुम्हारा प्रायश्चित्त होगा और मुझे मालूम हो जाएगा कि मनुष्य किन परिस्थितियों के कारण अपराध जगत् में प्रवेश करता है।"

फिर वह हीरो की मुद्रा में बोला, "पूछिए, मास्टर जी, क्या पूछना है ?"

"तुम में चोरी या जेब काटने की प्रवृत्ति कैसे उत्पन्न हुई ?"

"गुरु जी, गरीबी सब कुछ करा देती है। जब मुझे भूख लगती थी तो मैं कहीं से भी लोहा चुरा कर बाजार में बेच आता और बदले में खाने का समान या नशे का सामान खरीद लाता और जब इससे भी काम न चला तो मैं जेबकतरा बन गया।"

"फिर तुम चोर से जेबकरे कैसे बन गए ?"

"जी, डिब्बे के लालच में मैं जेबकतरा बन गया।"

"यह डिब्बा क्या होता है ?"

"हमारी भाषा में मोबाइल को डिब्बा कहते हैं। मैं धीरे से लोगों की जेब टटोलता और जिसकी जेब में डिब्बा होता, धीरे से निकाल लेता। फिर मैं मोटर साईकिल की चोरी भी करने लगा। इस काम में मुझे एक आवारा, जरुरतमन्द साथी मिल गया जो चोरी करने में मेरी सहायता किया करता था।

"तुम मोटर साईकिल की चोरी कैसे करते थे ?"

'हम में से एक मोटर साईकिल के सामने खड़ा हो जाता और दूसरा उसकी ओट में किसी भी चाभी से ताला खोल देता। हमारे पास कई चाभियाँ होती हैं।

"फिर तुम पकड़े कैसे गए ?"

"किस्मत ने हमारा साथ नहीं दिया। एक दिन मैं और मेरा दोस्त मोटर साइकिल चुरा कर भाग रहे थे। हम लगभग 15 किलोमीटर जा चुके थे कि अचानक मेरी सेटिंग का फोन आया कि तुम मुझ से बिना मिले चले गए, मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ।"

"ये सेटिंग क्या होती है''? मैने साश्चर्य पूछा।

"हमारी भाषा में प्रेमिका को सेटिंग कहा जाता है।" उसने सलज्ज भाव से कहा।

मुझे आश्चर्य हुआ इन अनपढ़ वैयाकरणिकों पर। ये मोटर साइकिल तो चुराते ही हैं। अब अंग्रेज़ी के शब्द भी चुराने लगे हैं और उन पर हिन्दी के कलपुर्जे और कवर चढ़ा कर बाजार में बेचने लगे हैं। 'सेटिंग' अर्थात् जिससे पहले ही सेट किया हो कि कहाँ मिलना है। हिन्दी शब्दकोष को इन चोर वैयाकरणिकों द्वारा गठित, शब्द को सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए। हिन्दी भाषा की 'प्रेमिका' तो भटक सकती है परन्तु इन चोर वैयाकरणिकों की 'सेटिंग' इस भटकाव से बच जाती है।

फिर मोहन ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "जब मेरी सेटिंग का फोन आया तो मेरे मित्र ने मुझे बहुत समझाया कि लौटना हमारे लिए खतरनाक होगा, पुलिस हमें ढूँढ रही होगी। लेकिन मुझ पर तो सेटिंग से मिलने का भूत सवार था। मैं लौट पड़ा। आगे पुलिस ने नाका लगाया हुआ था। वह मोटर साइकिल चोर को खोज रही थी। पुलिस ने घेर कर हमें पकड़ लिया। मेरे पीछे बैठे मेरे दोस्त ने पुलिस को स्पष्ट कह दिया कि मैंने रास्ते में इससे मोटर साइकिल में बैठने के लिए लिफ्ट माँगी थी। मैं तो इसे जानता ही नहीं। परिणाम स्वरूप पुलिस ने उसको छोड़ दिया।

फिर मुझसे मोटर साइकिल के कागजात माँगे गए। मेरे पास कागजात तो थे ही नहीं। मैंने बहाना बनाते हुए कहा कि कागजात तो घर में ही गए हैं। आप चाहें तो मोबाइल से बातचीत करा सकता हूँ। पुलिस वालों ने कहा, "करा दो।"

फिर मैंने अपनी सेटिंग को सम्बोधित करते हुए कहा, "कल्पना (कल्पित नाम) मुझे पुलिस ने पकड़ लिया है। तुमने मोटर साइकिल के कागजात तो संभाल कर रखे होंगे ?"

वह समझ गई कि मैं किसी खतरे में हूँ। वह जोर से सुनाने की मुद्रा में बोली, "हाँ, संभाल कर रखे हैं, चाहो तो ले जा सकते हो।" मैं उसकी समझदारी से प्रसन्न हुआ और मुझे उम्मीद हुई कि मैं छूट जाऊँगा। लेकिन पुलिस को कुछ शक हुआ। एक पुलिस कर्मी ने मेरा मोबाइल मेरे हाथ से छीनते हुए मेरी सेटिंग को सम्बोधित करते हुए कहा, "मोटर साइकिल का नम्बर क्या है ?" इतना सुनते ही सेटिंग जवाब न दे सकी और उसने मोबाइल बन्द कर दिया।

मैंने सोचा कि अब पुलिस जम कर मेरी धुनाई करेगी लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह तो और भी विनम्र होकर बोली, "हम तुम्हें छोड़ देंगे, अगर तुम सच–सच बता दो कि तुमने कहाँ–कहाँ चोरी की और अपना सामान कहाँ रखा है ?"

मुझे विश्वास हो गया कि वे मुझे छोड़ देंगे। तब मैं उनको एक सुनसान झोंपड़ी में ले गया।। वहाँ मैंने एक दोस्त के यहाँ चुराई हुई मोटरसाईकिल रखी हुई थी। तब पुलिस ने मेरी इतनी पिटाई की कि मैं जीवन भर नहीं भूल सकता और मुझे जेल में बन्द कर दिया, अब आप मुझे देख ही रहे हैं।"

"मैं खासकर गंगा स्नान के अवसर पर चोरी करता था। यात्री लोग सुबह तीन–चार बजे ही गंगा में डुबकी लगाना शुरू कर देते हैं। मैं भी सवेरे ही वहाँ पहुँच जाता था। सामान किनारे घाट पर रखकर ज्यों ही यात्री गंगा में डुबकी लगाते, मैं फुर्ती से उनका सामान चुरा कर चम्पत हो जाता था। कुछ–कुछ अँधेरा होने के कारण वे मुझे पहचान नहीं पाते थे। एक दिन तो मैंने पूरे तीस हजार रूपये कमाए।"

उसकी बात सुनकर मुझे ऐसा लगा कि मेरे सामने एक ऐसा विषैला साँप है जिसको मैं न तो मार सकता हूँ और न छोड़ सकता हूँ। जब यह अभी इतना कठोर और हृदयहीन है तो भविष्य में कितना क्रूर और आततायी होगा। अगर मैं इसको भावी डाकू या फाँसी के फंदे में लटकने वाला क्रूरतम व्यक्ति कहूँ तो अतिशयोक्ति न होगी। इन कठोर विचारों की ऊष्मा के बाद मुझे याद आया कि मैं तो इस जैसे अन्य बाल बन्दियों को सुधारने आया हूँ। अतः मैंने अपने विचार और वाणी पर संयम रख कर पूछा, "मोहन क्या कभी तुम्हें आने इन बुरे कार्यों पर पछतावा हुआ है ?"

"हाँ, हुआ है, एक बार।" वह कुछ देर रुका, वह सोच रहा था कि बताऊँ या नहीं? मैंने पूछा, "तुम बताते क्यों नहीं ?"

यह बताना इतना सरल नहीं है। मुझे अपने दिल पर पत्थर रखना पड़ेगा। मैं कितना ही कठोर क्यों न होऊँ, लेकिन मेरे अन्दर भी मासूम आत्मा है। यह आत्मा भी उस दिन रोई थी।"

"किस दिन ?"

"लगता है, आप बिना सुने नहीं मानेंगे। तो सुनिए, एक दिन मैं प्रातः काल लगभग चार बजे गंगा घाट पर गया। वहाँ बहुत भीड़ थी। एक अच्छे घराने की महिला स्वयं गंगा जी में डुबकी लगा कर अपने बच्चों को डुबकी लगाने के लिए ज्यों ही गंगा जी की ओर मुड़ी, मैं उसके पर्स पर झपटा और एक सेकेण्ड में रफूचक्कर हो गया। मुझे पता नहीं कि मेरे पीछे मैं क्या हुआ लगभग दो घंटे बाद अपने कपड़े बदल कर जब मैं उस गंगाघाट के पास पहुँचा तो किसी आश्रम के बाहर साधुओं, संन्यासियों तथा भिखारियों की भीड़ लगी हुई थी। समीपस्थ आश्रम में पधारे हुए एक सेठ जी उन्हें भोजन परोस रहे थे। भीड़ में एक औरत की जोर–जोर से रोने की आवाज आ रही थी। और विलख–बिलख कर कह रही थी कि इतनी दूर से साधु–संन्यासियों और भिखारियों के लिए भण्डारा करने आई थी। लेकिन अब मैं खुद भिखारिन हो गई हूँ। किसी चोर ने मेरा पर्स ही चुरा लिया है। उसमें पूरे ग्यारह हजार रुपये थे। हे ईश्वर, ये आपने क्या, मैं तो भीख देने आई थी पर अब खुद भिखारिन हो गई हूँ। अब क्या करुँ जाऊँ? कौन देगा मुझे सहारा?'' उसका बच्चा भी उसकी गोद में दूध के लिए मचल रहा था।''

''चुप कर, यह करुण कहानी आगे मुझ से नहीं सुनी जायेगी'' मैं जोर से चिल्लाया। मेरी आँखों में आँसू आ गए। मुझे लगा, जिस नारी का पर्स चुराया गया है, वह भारत की आत्मा थी, मानवता थी। इस देश की माँ, बहिन या बेटी थी।

कहाँ भटक रही होगी, वह अपने रोते–विलखते बच्चे को लेकर। अगर वह मेरी बेटी, बहिन या माँ होती तो मुझे उसे

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

फलित ज्योतिष का पर्दाफाश

● डॉ. अनिरुद्ध भारती

ज्योतिष शास्त्र का वर्णन वैदिक काल से ही किसी न किसी रूप में मिलता है। काल चक्र के साथ ज्योतिष शास्त्र में अनेक विकृतियाँ आ गईं और अब यह विधा पतन के इतने गहन गर्त में गिर चुकी है कि इसका उद्धार लगभग असम्भव सा ही है। इसने तो अब दुर्दमनीय दैत्य का रूप धारण कर लिया है।

आश्चर्य तथा दुःख तो इस बात का है, कि आधुनिक–युग का सबसे महत्वपूर्ण, विश्वसनीय तथा सशक्त माध्यम दूर–दर्शन (टेली विज़न) इस विधा को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान कर लोगों को निकम्मा, आलसी और परमुखापेक्षी बना रहा है। शायद ही कोई ऐसा चैनल हो, जिस पर इस विधा को पर्याप्त से अधिक महत्त्व न दिया जा रहा हो। सच तो यह है कि व्यावसायीकरण की इस दौड़ में जीवन की हर धारा विवेकभ्रष्ट होती जा रही है। हम बात कर रहे हैं, तथाकथित उन भविष्य वक्ता कलियुगी ज्योतिषियों की, जिनकी मनमोहक लच्छेदार बातें सुनकर अच्छे–अच्छे धर्मधुरीण धैर्यशाली जन भी इस वेगवती धारा में बहने से स्वयं को नहीं रोक पाते। उनके लहराते लम्बे घुंघराले केश पाश,मस्तक पर आड़ी–तिरछी चंदन की रेखाएँ, नेत्रों अंगुलियों तथा मुखाकृति के नाटकीय संकेत, राशियों की चकोर तथा कुण्डलाकार संख्यावाचक चित्र बनाकर दर्शक तथा श्रोता पर ऐसा अमोघ जाल फेंकते हैं कि वह फँसे बिना रह ही नहीं सकता।

इसमें सन्देह नहीं कि ज्योतिष शास्त्र की गणना आर्ष शास्त्र के अन्तर्गत वेदांग के रूप में की गई है। परन्तु इस विधा में भूगोल, खगोल, विज्ञान तथा गणित आदि के विषय में ही प्रकाश डाला गया है, मनुष्य के भावी सुख–दुःख सम्पन्ता–विपन्नता या जीवन–मरण का इससे कोई सरोकार नहीं है। वस्तुतः गणित ज्योतिष सर्वथा सत्य एवं वैज्ञानिक है, फलित ज्योतिष तो इन तथाकथित ज्योतिषियों के दिमाग की ही उपज है।

आचार्य भास्कर ने लिखा है–

''शब्द शास्त्रं मुखं ज्योतिष चक्षुषी,
श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पं करौं।
या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका,
पाद पद्म द्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः।।

अर्थात् व्याकरण वेद के मुख के समान, ज्योतिष नेत्रों के और निरुक्त कानों के समान हैं। कल्प हाथों के समान, शिक्षा नासिका के समान तथा छन्द पैरों के समान हैं।

महर्षि दयानन्द ने जन्म पत्री, कुण्डली आदि के विषय में विस्तार से सोदाहरण रूप में लिखा है, उस सबका उल्लेख करता तो पिष्ट पेषण करना ही होगा। तीसरे समुल्लास में उद्धृत इन पंक्तियों को देना ही पर्याप्त है 'दो वर्ष में ज्योतिष शास्त्र सूर्य सिद्धान्तादि जिसमें बीज गणित, अंक गणित, भूगोल, खगोल, और भूगर्भ विद्या है, इसको यथावत् सीखें, परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्म पत्र, राशि, मुहूर्त आदि के फल विधायक ग्रन्थ हैं, उनको झूठे समझ कर कभी न पढ़ें और (न) पढ़ावें।'

वैसे इस विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है, आगे भी बहुत कुछ लिखा जा सकता है किन्तु विशेष विस्तार में न जाकर यहाँ हम उन प्रामाणिक ज्योतिषाचार्यों तथा समाज में मान्य प्रतिष्ठित उन भुक्त भोगियों के विचारों को उद्धृत करेंगे, जिनकी सम्मति और भोगे गये परिणामों को पढ़कर सुधी पाठक–गण उनसे उजागर तथ्यों को अस्वीकार नहीं कर सकेंगे।

सर्व प्रथम शान्ति निकेतन में कवीन्द्र रवीन्द्र के सान्निध्य में रहने वाले हिन्दी–साहित्य के शीर्षस्थ लेखक तथा विचारक ज्योतिषाचार्य डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी की सम्मति देखिएः ''हमारे देश के सबसे प्राचीन ग्रन्थ वेद हैं जिनमें फलित ज्योतिष के सम्बन्ध में कोई विशेष उल्लेख नहीं है। यह विश्वास भारत के आदि युग में बिल्कुल नहीं था कि मनुष्य के भाग्य का नियंत्रण कोई आकाशचारी ग्रह या नक्षत्र कर रहा है। अपने शुभ या अशुभ कर्मों के फल स्वरूप ही मनुष्य शुभ या अशुभ फल पाता है, किसी दूसरे के कारण नहीं।''

अब दो ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जायेंगे जिन्हें पाठक–गण चाह कर भी 'ना' नहीं कर सकेंगे।

पहला उदाहरण – श्री पं. सुधाकर जी द्विवेदी काशी के (अपने समय के) सबसे बड़े ज्योतिषी थे। वे काशी के संस्कृत कॉलिज में ज्योतिष शास्त्र के मुख्याध्यापक थे। उनके घर एक पुत्री का जन्म हुआ। उन्होंने उसकी कुण्डली तैयार की। इसके अतिरिक्त अन्य ज्योतिषियों ने भी (उसकी) कुण्डलियाँ तैयार करके भेजीं। सबने लिखा कि कन्या अत्यन्त भाग्यशाली है। जब वह कन्या विवाह के योग्य हुई तो उन्होंने अन्य ज्योतिषियों से कन्या की कुण्डली मिलाकर उसका विवाह कर दिया। परन्तु दुर्भाग्य वश वह कन्या विवाह के छः मास पश्चात् ही विधवा हो गई। अब पण्डित जी का फलित ज्योतिष से सदा के लिये विश्वास उठ गया। उन्होंने काशी के टाउन हाल में फलित ज्योतिष के विरुद्ध व्याख्यान दिया और सब ज्योतिषियों को चुनौती (चेतावनी) दी कि ''आओ इस विषय पर शास्त्रार्थ कर लो।'' परन्तु कोई भी ज्योतिषी (शास्त्रार्थ के लिये) नहीं आया। तब उन्होंने वहीं घोषणा की कि फलित ज्योतिष पर मेरा विश्वास नहीं है, मैं इसको खेल समझता हूँ। ये ज्योतिषी लोग अपनी झूठी बकवास से जनता का धन लूटते हैं।

दूसरा उदाहरण – भारत के कई व्यापारिक तथा औद्योगिक परिवारों में ''बिड़ला परिवार'' का नाम प्रथम पंक्ति में आता है। इस परिवार ने अपने परिश्रम, योग्यता तथा व्यवहार कुशलता से देश का नाम ऊँचा कियाा है। यहा इस परिवार का परिचय प्रस्तुत करने का हमारा उद्देश्य नहीं है। परन्तु पाठक वृन्द की सामान्य जानकारी के लिए चारों बिड़ला बन्धुओं के नाम देने का लोभ हम संवरण नहीं कर पा रहे हैं। वे नाम हैं श्री जुगल किशोर बिड़ला, श्री रामेश्वरदास बिड़ला, श्री घनश्याम दास बिड़ला तथा श्री ब्रजमोहन बिड़ला।

बिड़ला बन्धुओं के पूज्य पिता का नाम था श्री बलदेव दास जी बिड़ला। श्री बलदेव दास बिड़ला, अत्यन्त उदार, नम्र तथा खुले हृदय एवं मुक्त हाथों से दान देने में एक ही थे। श्री बलदेव दास बिड़ला अपने पिता के तर्पण के लिये बनारस गये। उस समय उनकी आयु 46 वर्ष की थी। तभी बनारस में उनकी भेंट एक प्रकाण्ड ज्योतिषी से हुई। श्री बलदेव दास जी पुराने पौराणिक विचारों के व्यक्ति थे, अतः पूजा पाठ, मृतक श्राद्ध, ज्योतिष आदि में उनका गहरा विश्वास था। वहां ज्योतिषाचार्य से मिल कर उन्हें अपार हर्ष हुआ। पूछने पर उन विद्वान ज्योतिषी जी ने उन्हें बताया ''आपकी कुल आयु 55 वर्ष की है।'' इस भविष्यवाणी को सुनकर श्री बलदेव दासबिडला कुछ चिन्तित हुए, क्योंकि उनके सामने अभी अनेक योजनाएँ परिवार को संवारने की थीं और समय केवल (ज्योतिषी के अनुसार) दस वर्ष का था।

इसके पश्चात् वे रामेश्वरम् आदि तीर्थों का भ्रमण करके बम्बई लौटे और व्यापार कार्यों में तटस्थ भाव से पुत्रों की सहायता करने लगे। शेष जीवन में काशी वास के लिये उन्होंने बुजुर्गों से आशीर्वाद लिया और अधिकांश समय वहीं (काशी में) बिताने लगे। इसी दौरान श्री बिड़ला जी ने उसी ज्योतिषी को फिर बुलवाया जिसने उनकी मृत्यु की अवधि बताई थी। इस समय वे 55 वर्ष की आयु को पार कर चुके थे। उन्होंने ज्योतिषी जी से कहा – ''तेरी बताई तिथि तो निकल गई, अब बता मृत्यु कब आने वाली है?'' ज्योतिषी जी फिर कुण्डली का अध्ययन करने और अंगूठे से उंगलियों के पौरवों को छूते हुए भविष्य देखने में मग्न हो गये। अपनी दूर दृष्टि से विचार कर ज्योतिषी जी ने कहा– ''अभी आपको दस वर्ष और जीना है।'' श्री बलदेवदास ने उचित दक्षिणा देकर मुस्कराते हुए पं. जी को विदा किया। अब वे स्थायी रूप से काशी में ही रहने लगे थे।

व्यापार से उन्होंने हाथ खींच लिया और पण्डितों तथा ज्ञानियों से धर्म चर्चा तथा उनका सम्मान करने में ही समय व्यतीत करने लगे। इस शुभ कार्य को करते हुए उन्होंने पैंसठ वर्ष की आयु सीमा भी पार कर ली। एक दिन उन्होंने फिर उसी ज्योतिषी को बुलाया और उनका सत्कार तथा जलपान कराने के पश्चात् फिर यह जिज्ञासा की– ''बताओ अब और कितना जीना है मुझे?'' ज्योतिषी जी फिर जन्म पत्री को नये सिरे से बाँचने लगे। तभी श्री बलदेवदास जी ने व्यंग्यात्मक हँसी हँसते हुए कहा – ''बस रहने दो पं. जी? क्यों कष्ट करते हो। आप जन्म पत्री ही बाँचना जानते हैं, कर्म पत्री नहीं।'' पता नहीं ज्योतिषी जी ने श्री बिड़ला जी की इस व्यंग्योक्ति का समझा या नहीं, वह अपना सा मुँह लेकर चले गये।

इसके बाद उन्होंने फिर कभी किसी ज्योतिषी को नहीं बुलाया। भविष्यवाणी पर विश्वास करने का तो अब प्रश्न की कहाँ था? सन् 1863 में जन्म लेकर सन् 1956 में 93 वर्ष की पूर्ण आयु कर श्री बलदेव दास जी बिड़ला पंच तत्व में विलीन हो गये।

देखे आपने फलित ज्योतिष के भयानक परिणाम?

जीवन के भविष्य को अन्धकार में धकेलने वाली, मानव–समाज को पंगु करने वाली इस विधा को हमने इसीलिये दुर्दमनीय दैत्य कहा है। ऊपर जिन विद्वानों तथा भुक्त भोगी महानुभावों का उल्लेख किया गया है, वे सभी पौराणिक मान्यता के विश्वासी और सनातनी परम्परा के वाहक हैं। परन्तु इस ज्योतिष–दैत्य को उन्होंने जिस रूप में देखा तथा समझा है, उससे उन्होंने स्वयमेव तोबा कर ली। भला क्यों? समझने वाल समझ गये–जो ना समझे वे......। ओम् तत्सत्।

आर्य पी.जी. कॉलिज
पानीपत – 132103
मो. 09996023046

thearyasamaj.org

युग पुरुष स्वामी दयानन्द कौन थे

● कन्हैयालाल आर्य

मैं सादर प्रणाम करता हूँ उस महागुरु दयानन्द को, जिसकी दिव्य दृष्टी ने भारत की आत्म गाथा में सत्य और एकता का बीज देखा। जिसकी प्रतिभा ने भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व विषयक अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता के जागृति लोक में लाना था। उस गुरु को मेरा बारम्बार प्रमाण है।'' ये ज्वलन्त शब्द विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा अभिव्यक्त अपने एक ऋषि कल्प युग पुरुष के प्रति अर्पित नवीन भारत की श्रद्धांजलि के प्रतीक हैं।

वास्तव में महर्षि दयानन्द हमारी आत्मा के बन्धनों को काटने आये थे। महर्षि दयानन्द का हमारे इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है। उन्होंने हिन्दू धर्म को मध्य युग की धार्मिक कूपमण्डूकता और पुरोहित तन्त्र के चंगुल से छुटकारा दिलाने का सबसे सबल प्रयास किया था। अन्ध विश्वास, महन्त, मठाधीश एवं पण्डे पुजारी के जंजाल में उलझे हुए भारतीय समाज को एक नया प्रकाश देकर, उन्होंने उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का सबल प्रयास किया था।

जैसे चमकने वालों में सूर्य, हाथियों में ऐरावत, भौतिक पदार्थों में रत्न वीरों में जामदग्न्य, आदर्श पुरुषों में राम, नीतिज्ञों में चाणक्य, योगेश्वरों में कृष्ण तथा शीतल तत्त्वों में चन्द्रमा को निराला माना जाता है, इसी प्रकार महर्षि दयानन्द भी एक निराला व्यक्तित्व है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिस की तुलना किसी से नहीं की जा सकती।

स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन काल में सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके तत्कालीन समाज की स्थिति को देखा तो पाया कि लोग बहुदेवतावाद, जड़ पूजा, छुआछूत, बाल–विवाह, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष, जादू–टोना, पशु–बलि, मद्य, मांसाहार आदि अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रस्त हैं। ईश्वर के नाम पर अनेकों स्वयंभू ईश्वर बनकर जनता को पतन की ओर ले जा रहे थे। भारतीय समाज की जीवन परम्परा ईश्वरोक्त वैदिक धर्म से लगभग भिन्न हो चुकी है। लोग वेद, दर्शन, उपनिषद आदि आर्ष ग्रन्थों में वर्णित सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, निराकार ईश्वर से भिन्न कपोल कल्पित मिथ्या देवी, देवताओं की पूजा कर रहे हैं। स्त्री जाति पर भारी अत्याचार हो रहे हैं। स्त्री और शूद को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है। नारी ही नरक का द्वार है– ऐसी अवैदिक मान्यताओं को समाज में प्रचारित कर समाज को पीड़ित किया हुआ है। बाल विवाह, बहु विवाह एवं विधवाओं पर अत्याचारों से समाज में हाहाकार मच रहा था।

ऐसे अन्धकार के समय परमेश्वर की अपार कृपा से युग पुरुष ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। महर्षि दयानन्द जी ने अवैदिक मिथ्या मान्यताओं के प्रचलन से समाज और राष्ट्र में होने वाली अनेक प्रकार की हानियों तथा कुपरिणामों को देखकर समाज में पुनः विशुद्ध वैदिक मान्यताओं की स्थापना करने का मन में दृढ़ संकल्प किया। विश्व को ईश्वर के सत्य स्वरूप का दिग्दर्शन कराया और उद्घोष किया कि एक ईश्वर के पुत्र होने के नाते हम सब भाई हैं। महर्षि का स्वप्न था कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति दुःख और अशान्ति से छूट कर सूख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त करे। मानव को मानव से अलग करने वाली साम्प्रदायिक दीवारों को वे समाप्त करना चाहते थे।

वास्तव में महर्षि दयानन्द हमारी आत्मा के बन्धनों को काटने आये थे। महर्षि दयानन्द का हमारे इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है। उन्होंने हिन्दू धर्म को मध्य युग की धार्मिक कूपमण्डूकता और पुरोहित तन्त्र के चंगुल से छुटकारा दिलाने का सबसे सबल प्रयास किया था। अन्ध विश्वास, महन्त, मठाधीश एवं पण्डे पुजारी के जंजाल में उलझे हुए भारतीय समाज को एक नया प्रकाश देकर, उन्होंने उसे अपने पैरों पर खड़ा करने का सबल प्रयास किया था।

मेरा प्यारा दयानन्द सब बातों में निराला था। गुरु बना, स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त, लाजपत राय तथा श्यामकृष्ण वर्मा जैस अनूठे शिष्य उत्पन्न किये जिन्होंने राष्ट्र और समाज की अनथक सेवा की। शिष्य बने और ऐसे समर्पित कि गुरु को कहना पड़ा ''दयानन्द! मुझे आप का जीवन चाहिये। राष्ट्र एवं समाज हित में तुम्हारे जीवन की आहुति चाहता हूँ। गरु के इस पवित्र वाक्य को जीवन का आदर्श मान कर आजीवन निभाया। गुरुडम् नहीं चलाया। सन्तत्व में, त्याग में , तपस्या में, वैराग्य में, योगियों में, समाज सुधारकों में, वेद भाष्यकारों में, ब्रह्मचारियों में, युग प्रवर्तकों में, जीने वालों में, मरने वालों में आप का निरालापन समाज को प्रेरणा देता रहा है।

महर्षि दयानन्द जी के उपकारों को गिना तो नहीं जा सकता। परन्तु उनके मुख्य कार्यों में ईश्वर के सच्चे स्वरूप की स्थापना, यज्ञ प्रणाली को पनर्स्थापित करना, वेद प्रचार, स्वराज्य के पुनरुद्धारक, गौरक्षक, अछूतों के सच्चे सुधारक, हिन्दी भाषा के सच्चे हितैषी, अनाथों के रक्षक एवं सार्वभौमिक धर्म के प्रचारक के रूप में आपके योगदान को पूरा विश्व जानता है। परन्तु स्त्री जाति के प्रति आप के किए गए उपकारों को भुलाना तो कृतघ्नता होगी। महर्षि के प्रचार कार्य से पूर्व स्त्री जाति को पाँव की जूती माना जाता था। यदि वह विधवा हो जाती थी तो उसे आयुपर्यन्त ठण्डे सांस भर के जीवन व्यतीत करना पड़ता था। ''ढोल, गंवार, शूद्र पशु और नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी'' कह कर नारी को अपमानित किया जाता था। ऋषि दयानन्द जी ने महर्षि मनु के कथानुसार ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'', जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं की घोषणा करके नारी जाति पर बड़े उपकार किये। कन्याओं की छोटी आयु में विवाह कर दिये जाते थे। बूढ़ों के साथ विवाह कर उन्हें विधवा बनाकर समाज में अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश किया जाता था। बाल विवाह का विरोध कर युवावस्था में विवाह का प्रचार किया। कन्याओं की शिक्षा पर बल दिया, उन्हें घूंघट एवं पर्दे से बाहर निकाला। आज ईश्वर कृपा से नारियाँ मैजिस्ट्रेट, डॉक्टर, वकील, अध्यापिका, प्रशासनिक अधिकारी, मन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति तक बन रही हैं। स्वामी जी के उपकारों को स्त्री जाति कभी भी नहीं भुला सकती।

आज केवल भारत ही नहीं, सारे धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक संसार पर महर्षि दयानन्द का सिक्का है। विभिन्न मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल दिये हैं। धर्मपुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है। दलितोद्धार का प्राण, समाज सुधार की जान, आदर्श सुधारक, शिक्षा प्रचारक, वैदिक मान्यताओं का पुनर्स्थापक, स्त्री जाति का सच्चा रक्षक, करुणा निधि दयानन्द जी के जीवन से हम प्रेरणा लें।

आओ! हम अपने आपको ऋषि दयानन्द के रंग में रंगें। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो, हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो तभी हम एक स्वर से पुकार सकेंगे।

पापों और पाखण्डों से ऋषिराज
छुड़ाया था तूने।
भयभीत निरक्षित जाति को
निर्भीक बनाया था तूने।
बलिदान तेरा था अद्वितीय हो गई
दिशायें गुञ्जित थीं।
जन जन को देगा प्रकाश वह दीप
जलाया था तूने।

अन्त में यह निवेदन करना चाहता हूँ आर्यो! उठो! अपने को सम्भालो। अपने स्वरूप को देखो। जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज रूपी पवित्र संगठन को खड़ा किया था, उनकी पूर्ति के लिए व्रती तथा संकल्पी बनो। संसार हमारी ओर देख रहा है। वैचारिक चिन्तन आर्य समाज की सब से बड़ी सम्पदा है। हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं कि हमें ऋषि दयानन्द जैसा पुण्यात्मा प्रभुभक्त, सत्यज्ञान का प्रेरक मार्गदर्शक मिला है।

4/45, शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा
मो. नं. 09911197073

गुरुकुल मलारना चौड में होगा यजुर्वेद पारायण यज्ञ

एक विज्ञप्ति के अनुसार सर्वहिताय सर्वोदय उच्च प्राथमिक वेद शिक्षा मन्दिर (गुरुकुल), मलारना चौड, तहसील मलारना, डूँगर, जिला सवाई माधोपुर, राजस्थान में विशाल यजुर्वेद पारायण महायज्ञ व प्रवचन का आयोजन दिनांक 2 जून से 6 जून 2014 तक किया जा रहा है जिसमें स्वामी धर्मदेव (गुरुकुल कालवा, जीन्द), आचार्य सोमदेव (ऋषि उद्यान, अजमेर) विदुषी श्रीमती प्रभा शास्त्री (बरेली) के सारगर्भित प्रवचन होंगे और पं. भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली) के मधुर भजन होंगे।

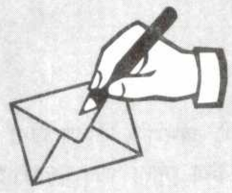

पत्र/कविता

अस्थि संचयन के बाद मृतक के लिए कोई भी कर्म नहीं

आत्मा के शरीर त्याग करने पर निर्जीव शरीर का जो विधिपूर्वक दाहकर्म किया जाता है, उसे 'अन्त्येष्टिसंस्कार' (अन्त्येष्टिकर्मविधि) कहा जाता है। यह उस शरीर की की जानवाली अन्त्य (अन्तिम) इष्टि (यज्ञ) है। वैदिक परंपरा में जड़ और चेतन (अर्थात शरीर और आत्मा) का संयोग ही जन्म है और इनका वियोग (अर्थात् आत्मा के शरीर से मुक्त होना) ही मृत्यु है। आत्मा नित्य और अमर है, तो शरीर अनित्य और नश्वर है। महर्षि दयानंद की मान्यता है कि जब तक एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृति और स्नान संस्कार स्थापित नहीं होते, तब तक किसी भी समाज की तथा देश की उन्नति नहीं हो सकती। इस विचार का प्रचार व प्रसार करने के लिए उन्होंने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक *'संस्कारविधि'* की रचना की। यह एक ऐसा महान ग्रंथ है कि जिसमें से पूर्व, जन्म के पश्चात् और अंत में मृत्यु पर्यंत किए जानेवाले संस्कारों का विवेचन किया गया है। संस्कारों की सीढ़ी से मानव देव श्रेणी में जा सकता हे। सोलह संस्कारों की इस सीढ़ी का आरम्भ गर्भाधानसंस्कार से तथा अंत अन्त्येष्टिसंस्कार से होता है। दयानंद ने इस अंतिम संस्कार का शीर्षक **'अथ अन्त्येष्टिकर्मविधिं वक्ष्यामः** ऐसा लिखा है और अंत **'इति मृतक-संस्कारविधिः' समाप्तः'** इस वाक्य से किया है।

'संस्कारविधि' में ऋषि ने लिखा है कि , अन्त्यष्टिकर्म उसे कहा जाता है कि जो शरीर का अंतिम संस्कार है। इसके पश्चात् आगे उस शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं। उसको ही **'नरमेध'**, नरयाग', 'पुरुषयाग' कहा जाता है। यजुर्वेद-अ.40, मं.95 में लिखा है कि 'भस्मान्तं शरीरम्।' अर्थात् शरीर की सत्ता भस्म होने तक ही है। मनुस्मृति (2-16) में कहा गया है कि,**' निषेकादि श्मशानान्ते मन्त्रैः यस्योदितो विधिः।** अर्थात् शरीर का प्रारंभ निषेक (ऋतुदान) से और अन्त शमशान (मृतककर्म) से होता है। निर्जीव शरीर निरंतर विकारयुक्त होकर वायु, भूमि, जल आदि को विकृत करते हुए रोगोत्पत्ति करके सृष्टि में दुःख का वातावरण निर्माण करता है। अतएव शरीर का दाहसंस्कार करना ही अपनी उच्च कोटि की सभ्यता, सौजन्यता और सांस्कृतिक श्रेष्ठता का परिचय देना है। आत्मारहित शरीर 'शव' और आत्मासहित शरीर 'शिव' कहलाता है। इस विधि के वैज्ञानिक भावार्थ को जानकर ही जॉर्ज बर्नाड शा ने ईसाई पंथ का अनुयायी होते हुए भी अपने मृत्युपत्र में अपने शरीर के दाहसंस्कार की इच्छा व्यक्त की थी, जिसका अनुपालन उनके परिजनों ने किया। यजुर्वेद-39।13 के अनुसार जो लोग इस प्रकार अन्त्येष्टिविधि करते हैं, वे समस्त मंगल करनवाले होते हैं। इस प्रकार सभी काल में शरीर को विधिवत जलाकर सबके सुखों की उन्नति करनी चाहिए। उसी प्रकार यजुर्वेद-39।3 में कहा गया है कि, जो लोग सुगंधियुक्त घृतादि सामग्री से शरीर को विधिपूर्वक जलाते हैं, वे पुण्यसेवी होते हैं। *'संस्कारविधि'* में यजुर्वेद के मंत्र प्रमाणों से कहा गया है कि दाहकर्म और अस्थिसंचयन के बाद मृतक के लिए अन्य कोई भी कर्त्तव्य कर्म नहीं। मृत्यु के पश्चात् मृतक के जीव का संबंध पूर्व-संबंधियों से कुछ भी नहीं रहता।जीव अपने कर्मानुसार जन्म लेता है।

श्रद्धापूर्वक कोई अपने पूर्वजों का स्मरण करे इसमें किसी की कोई आपत्ति नहीं।किन्तु श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन करवा के मृत पूर्वजों तक भोजन पहुंचाना यह बुद्धिसंगत नहीं। अन्त्येष्टिसंस्कार में बार-बार इस बात का उल्लेख किया गया है कि जीव शरीर छोड़कर अपने कर्मानुसार जन्म धारण करता है।

दार्शनिकों ने शरीर के तीन रूप दर्शाए हैं। (1) स्थूल शरीर, (2) सूक्ष्म शरीर और (3) कारण शरीर। यह दिखनेवाला स्थूल शरीर कर्म करता है। उस कर्म का संचय सूक्ष्म शरीर में होता है। यह सूक्ष्म शरीर जीवात्म के साथ रहता है। दाहक्रिया तो भौतिक शरीर (स्थूल शरीर) की होती है, सूक्ष्म शरीर की नहीं। मृत्यु होने पर स्थूल शरीर छूट जाता है और सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है। यह सूक्ष्म शरीर ही पुनर्जन्म का आधार है। मृत्यु से शरीर का रूपांतरण होता है, तो पुनर्जन्म आत्मा का रूपांतरण है। गीता के **'वासांसि जीर्णानि.....'** श्लोक में कहा गया है कि, आत्मा अमर है, वह कभी मरती नहीं। वह तो वस्त्र बदलती रहती है। वैदिक संस्कृति के अनुसार किसी वस्तु का नाश या विनाश नहीं होता बल्कि उसका रूपांतरण होता है। विज्ञान का भी यही सिद्धान्त है कि सृष्टि की किसी भी वस्तु का नाश नहीं होता प्रत्युत उसका केवल रूप बदलते रहता है।

भीमा शंकर साखरे
मेन रोड, श्रीराम मंदिर,
आलन्द,गुलबर्गा (कर्नाटक)-585302

****

ऐसे करना काम वेद पथ को अपनाना

देश भक्त, धर्मात्मा, चरित्रवान विद्वान।
जनसेवी, त्यागी, विनम्र, शीलवन्त इंसान।।
शीलवंत इंसान, सत्यवादी, तपधारी।
वीर, साहसी, बली, मेहनती, परोपकारी।।
करे सुजन की मदद, दण्ड दुष्टों को देता।
ऐसा नेता प्यार, सकल जग का पा लेता।।

नरेन्द्र मोदी जी सुनो! आप लगाकर ध्यान।
भारत के तुम बन गये, अब मंत्री-प्रधान।।
अब मंत्री-प्रधान, देश है दुखी हमारा।
अपमानित हर तरह, आज है भारत प्यारा।।
नेताओं ने जात-पात का, रोग बढ़ाया।
देशद्रोही-भ्रष्टजनों को गले लगाया।।

ऋषियों के इस देश में, गुण्डों का है जोर।
थानों के मालिक बने, जालिम, डाकू, चोर।।
जालिम, डाकू, चोर, मौज अब मार रहे हैं।
नाव देश की डुबा, बीच मंजधार रहे हैं।।
अगर रहा यह हाल, देश यह मिट जाएगा।
हम सबको नासमझ, सकल जग बतलाएगा।।

हे नेता जी! आपका, नरेन्द्र मोदी नाम।
जैसा सुंदर नाम है, ऐसे करना काम।।
ऐसे करना काम, वेद-पथ को अपनाना।
राम, कृष्ण, चाणक्य, शिवाजी बन दिखलाना।।
सबके लिए समान, आप कानून बनाना।
क्षेत्रवाद का वर्गवाद का, भेद मिटाना।।

बल्लभ भाई पटेल को, मान आप आदर्श।
लाल बहादुर शास्त्री, बन करना उत्कर्ष।।
बन करना उत्कर्ष, देश की शान बढ़ाना।
बन कर वीर सुभाष, जगत् में नाम कमाना।।
भारतवासी साथ, आपके हैं, प्रिय नेता।
निर्भय आगे बढ़ो, बहादुर वीर विजेता।।

पं नन्दलाल निर्भय
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष क्रमाँक - 9813845774

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 05 का शेष

महान विदुशी ....

कि मेरी बहुत पुरानी अभिलाषा थी आप से पारिवारिक सम्बन्ध जोड़ने की किन्तु इस अवस्था में क्या यह सम्भव हो पाएगा?

आश्वपति ने राजा द्युम्तसेन को ढाँढस बंधाते हुए कहा कि धन–सम्पति का आना–जाना तो समय के हाथ है। इसमें हम कुछ नहीं कर सकते। आप का सपुत्र तेजस्वी है। अपने तेज व शौर्य से वह कभी अपार सम्पति का स्वामी बन जाए, यह कौन जानता है? सावित्री ने स्वयंवर के आधार पर इसे अपना स्वामी चुना है, इस पर किसी का भी तथा किसी भी प्रकार से दबाब नही है। अतः आप यदि इसे स्वीकार करें तो हम सब को इस में प्रसन्नता होगी तथा मेरी बेटी की मनोकामना पूर्ण होगी।

राजा द्युम्तसेन ने राजा अश्वपति का अनुरोध अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार किया तथा अभ्यारण्यकवासी सब लोगों व उच्चकोटि के ब्राह्मणगण की उपस्थिति में दोनों का विवाह कर दिया गया। इस अवसर पर राजा अश्वपति ने अपनी पुत्री व दामाद को अपार धन सम्पति व आभूषण आदि भेंट स्वरुप दिए ताकि वह अपना भावी जीवन सुख पूर्वक जी सके। सावित्री सच्चे अर्थों में एक धर्म परायण देवी थी। अतः माता–पिता व परिजनों के लौटते ही सावित्री ने सब स्वर्णाभूषण उतार कर अपने ससुर के चरणों में रखते हुए साधारण जीवन व्यतीत करने का निर्णय लिया। वह जानती थी कि उसका पति किसी भयानक रोग से आक्रान्त है जिसका उपचार सम्भव नहीं है। ऐसे रोग शरीर में सोमकणों के अभाव व कमीं से ही होते हैं। अतः उसने अपने पति को उत्तम उपचार, उत्तम योग की सिद्धी तथा उत्तम भोजन के द्वारा रोग रहित करने का संकल्प लिया।

यह बताना आवश्यक है कि पौराणिक आख्यानों में तो यह कहा गया है कि जब धर्मराज उसे लेने आया तो सावित्री भी उसके पीछ चले दी। धर्मराज ने बार–बार सावित्री को वापिस लौटने के लिए कहा किन्तु सावित्री, जो एक विदुषी महिला थी तथा तर्क शक्ति की स्वामिनी थी, उसके तर्कों से निरुत्तर होकर वह उसे एक वर माँगने को कहता, वर माँगने पर, वर देने के पश्चात वह उसे लौटने को कहता है किन्तु सावित्री कोई अन्य तर्क दे देती है। इस प्रकार उसने पाँच वर मांगे। इन वरों में अपने ससुर की आंखों में प्रकाश व एक सौ पुत्रों का पिता होना तथा राज्य की वापिसी, अन्य दो में अपने लिए भी सौ भाईयों की कामना तथा स्वयं के लिए भी सौ पुत्रों की इच्छा, पति के लिए चार सौ वर्ष की आयु, जिसे धर्मराज ने उसे शीघ्र प्रदान किया। इस प्रकार आँखों का प्रकाश, राज्य, भाई, सन्तान व पति को जीवित पा कर वह धन्य हुई।

इस आख्यान को हम नहीं मानते क्योंकि हमारी दृष्टि में पुराण में कपोल कल्पित गप्पों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। हमारे विचार में सावित्री अपने समय की उच्च शिक्षित व वेद की विदुषी महिला थी। आयुर्वेद में उसे अत्यधिक ज्ञान रहा होगा। आयुर्वेद के उस काल के उच्चतम चिकित्सकों से भी उसका अच्छा सम्बन्ध रहा होगा। उसके पिता ने भी इस निमित्त उसकी अत्यधिक सहायता की होगी ताकि उसकी बेटी सुखी जीवन व्यतीत कर सके। अतः उसने अहोरात्र अर्थात दिन–रात अपने पति व अपने सास–ससुर की सेवा की।

सब प्रकार की औषध से उनका उपचार किया। उत्तम कोटि की दवाइयाँ, जड़ी बूटियाँ उन्हें स्वस्थ होने के लिए दीं। इस सब के परिणाम स्वरूप जहाँ राजा द्युम्तसेन की आँखों की ज्योति लौट आई, वहीं शक्ति वर्धक औषध के कारण उनके शरीर में सोम कणों की अत्यधिक मात्रा में उत्पत्ति हुई, जिससे उनके शरीर में शक्ति पैदा हुई। इस शक्ति के बल पर न केवल वह अपना राज्य पुनः प्राप्त करने में सफल हुए बल्कि अनेक पुत्रों के पिता होने का गौरव भी प्राप्त हुआ।

सोम के सम्बन्ध में वेद में अत्यधिक वर्णन मिलता है। चार वेद तो इस का यशोगान करते ही हैं किन्तु ऋग्वेद में तो सोम के ऊपर पूरे 150 सूक्त दिए हैं, जिनमें लगभग 1500 से अधिक मन्त्र समाहित हैं। इसमें बताया गया है कि सोम शक्तिवर्धक, बुद्धि, ज्ञान वर्धक है। जो सोम की रक्षा नहीं करता उसका जीवन मृतक के समान है। अतः निश्चत रूप से वेद की विदुषी इस सावित्री ने वह सब उपचार इन सब का किया होगा, जिससे सोम कणों की तेजी से वृद्धि होती हो। इससे ही ससुर को आँख की ज्योति व उनका राज्य, मायके में अनेक भाई तथा पति सत्यवान को पूर्ण स्वस्थ करके योग सिद्धि के द्वारा चार सौ वर्ष की आयु तक जीवित रखने में तथा अनेक शौर्यों से भरपूर पुत्रों की प्राप्ति में वह सफल हो सकी।

104–शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी
गाज़ियाबाद

☞ पृष्ठ 06 का शेष

शराब (अल्कोहल) एक...

moral degradation. It would be better to die outright than to be alcoholised before death.")

इन सभी प्रयोगों, प्रमाणों, तर्कों और मतों द्वारा स्पष्ट हो गया है कि शराब विष ही नहीं, एक भयंकर विष है। किन्तु शराब विक्रेताओं द्वारा उसके दवाई के रूप में प्रचार से, बाजार में खुले तौर पर आसानी से मिलने से लोग यह समझ रहे हैं कि यह तो मात्र पेय पदार्थ हैं यदि हम अन्य विषों से इसकी तुलना करें तो हमें ज्ञात होगा कि अन्य विषों की तुलना में शराब अधिक कष्टदायक, हानिकारक, खतरनाक और मँहगी है। अभी तक की खोजों के अनुसार संसार में पोटाशियम साइनाइड तेज विष हैं। उसके खाने के कुछ मिनट के अन्दर ही आदमी मर जाता है। मृत्यु का कष्ट अनुभव नहीं कर पाता। इसके बाद संखिया, कुचला आदि अन्य प्रसिद्ध विष हैं, जिनके खाने से कुछ समय में मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। इन विषों से होने वाली मृत्यु में मनुष्य को कुछ घंटे कष्ट सहना पड़ता है। हत्या या आत्महत्या के लिए इन विषो का प्रयोग बहुत समय से होता रहा है। ये विष बहुत मँहगे भी नहीं हैं, किन्तु ये विष आसानी से नहीं मिलते। बिना लाइसेंस के इन्हें न कोई खरीद सकता है न बेच सकता है।

शराब इन सब विषों से मंहगा और अधिक कष्ट देने वाला विष है। अन्य विषों से तो मृत्यु कुछ घण्टों में या दो–चार दिन में ही हो जाती है, परन्तु शराब के कारण मनुष्य को जीवनभर कष्ट भुगतना पड़ता है। अन्य विष केवल प्राण लेते हैं, परन्तु शराब प्राण और धन दोनों को ही समाप्त कर देती है। अन्य विष केवल खाने वाले को ही कष्ट देते हैं किन्तु शराब तो पीने वाले के समूचे परिवार को कष्ट देती है। आश्चर्य तो यह है कि फिर भी शराब पीने पर या शराब की बिक्री पर कोई रोक नहीं है। आप चाहे जितनी शराब खरीदकर पी सकते हैं; अपने मित्रों को भी पिला सकते हैं। नशे में धुत्त हो सकते हैं, और मर भी सकते हैं कोई आपको रोकेगा नहीं।

यह सब कुछ जानते हुए भी सरकारें और व्यापारी पैसे के लालच में खुले तौर पर विष बेच रहे हैं और जनता की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। लोगों की बीमारियों और कीमत पर पैसे बटोर रहे हैं। मनुष्य लालच में कितना गिर सकता है, इसका एक घृणित उदाहरण शराब का विक्रय है।

आचार्य जी की पुस्तक
'सर्वनाश मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'
शराब से साभार

अल्कोहल के विषय में डॉक्टरों/ वैज्ञानिकों के निष्कर्ष

''अल्कोहल जो भ्रमात्मक आनन्द, क्रिया और शक्ति प्रदान करने वाला पदार्थ है, कब्र में दफनाये जाने योग्य है। किसी कवि, चिकित्सक, धर्म–पुरोहित और चित्रकार ने इससे प्रबल शैतान को नहीं देखा।''

–डॉक्टर बी.डब्ल्यू. रिचर्डसन, एम.डी., एफ.आर.एस.

''अल्कोहल डॉक्टरी के लिए भी योग्य नहीं है। भोजन भी नहीं है।''

–सर विक्टर होसले, एफ.आर.एस.

–''मैं कहता हूँ कि देश को नष्ट करने में अल्कोहल प्रबल योद्धा है।''

– सर वमगल बार्ट, एम.डी.

''अल्कोहल मस्तिष्क को नष्ट कर देता है।''

–ई. मेकडोवेल कासग्रेव, एम.डी., एफ.आर. सी.पी.,

''शरीर को अल्कोहल से कभी लाभ नहीं हो सकता।''

–सर एण्ड्र क्लार्क वार्ट, एम.डी. (मद्य–निषेध–चन्द्रसेन, पृ.40–41)

☞ पृष्ठ 07 का शेष

और मेरी आँखों में ...

खोजना होगा।''

मैं आवेश में बोलता चला गया, ''मोहन, तुझे ईश्वर कभी भी क्षमा नहीं करेगा। तूने एक दाता को भिखारी बना दिया। लोग यहाँ पर दान–पुण्य करने तथा आत्म शान्ति के लिए आते हैं पर तूने उनके विश्वास को ठेस पहुँचाई है। अगर तू चोरी करते हुए पकड़ा जाता तो लोग तुझे पीट–पीट कर अधमरा कर देते या जान से ही मार देते। ईश्वर की कृपा समझ कि तू मरने से बच गया। शायद ईश्वर तुझे सुधरने का मौका देना चाहता है।

''गुरु जी, आप ठीक कह रहे हैं। मैं अब मन से सुधरने की कोशिश करूँगा।'' वह गिडगिड़ाते हुए बोला। फिर भी मेरा आवेश शान्त नहीं हुआ। मैं ऋषि मुद्रा में बोला,''बालक! यदि मैं वाल्मीकि ऋषि जैसा आदिकवि होता तो तुझे अभिशाप देते हुए कहता, **'मा निषाद प्रतिष्ठांश्वत्वमगमः शाश्वती समाः'** पर मैं ऐसा नहीं कर सकता। फिर मेरी आँखों में, मेरे मन – मस्तिष्क में दाता से दीन (भिखारिन) बनी हुई उस अभागिन नारी का चित्र उभरने लगा, कहाँ होगी वह, होगी भी या नहीं, उसका बच्चा जीवित होगा या...? उसके पति, माता–पिता, सास–श्वसुर, सम्बन्धी, परिवार पर क्या गुजर रही होगी? मुझे लगा, मेरा माथा फट जाएगा। अतः मैंने यही उचित समझ कि यहाँ से उठ कर और कहीं चला जाऊँ।

230, आर्यवानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 28-29/5/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

देहरा हिमाचल प्रदेश में आर्य समाज के आदर्श-पुरुषों को स्मरण किया गया

डी.ए.वी. विद्यालय देहरा के प्रागंण में एक बृहद् यज्ञ द्वारा किया गया। स्कूल परिसर व देहरा नगर में महर्षि दयानन्द व महात्मा हंसराज की झांकियाँ भी निकाली गईं। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा भाषण, कविता–पाठ, भजन गायन के माध्यम से वैदिक मूल्यों और आर्य समाज की नीतियों व आदर्शों का गुणगान किया गया। आर्य समाज के उद्घोषों व नारों से सारा वातावरण गुजांयमान हो उठा।

नगर में इस शोभायात्रा की हार्दिक प्रशंसा की गई तथा डी.ए.वी. विद्यालय में शिक्षा, सामाज सेवा और मानवीय मूल्यों के प्रचार प्रसार पर हो रही गतिविधियों पर सन्तोष और प्रसन्नता अभिव्यक्त की।

प्राचार्य श्री जी. के. भटनागर ने अपने संबोधन में छात्रों को महात्मा हंसराज व आर्य समाज से जुड़ी विभूतियों के आदर्शों का पालन करने का आह्वान किया व उनके पदचिन्हों पर चलने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया।

पंचकूला में महात्मा हंसराज जी का 150वाँ जन्मदिवस समारोह

हंसराज पब्लिक स्कूल में महात्मा हंसराज जी का 150वाँ जन्मदिवस पूरे हर्षोल्लास से मनाया गया। इस शुभावसर पर विद्यालय को ओ३म् ध्वजों से सुसज्जित किया गया। सर्वप्रथम प्रातःकाल हवन करवाया गया जिसमें स्वामी श्रद्धानन्दजी, जस्टिस ए. एल. बाहरी (चेयरमैन हंसराज पब्लिक स्कूल), श्री हंसराज गंधार (मैनेजर हंसराज पब्लिक स्कूल) एवं विभिन्न डी.ए.वी. विद्यालयों के प्रधानाचार्य विद्यमान थे। दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आर्य जगत् के संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (पलवल, हरियाणा) थे। उन्होंने विद्यार्थियों को महात्मा हंसराज जी के जीवन का परिचय दिया तथा उनके समान बनने के लिए प्रेरित किया।

विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीममती जया भारद्वाज ने उपस्थित जनों का हार्दिक अभिनन्दन व स्वागत किया गया तथा कहा कि हम इस प्रकार के आयोजन इस लिए करते हैं ताकि आज के बच्चे भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूक रहें।

इस उपलक्ष्य में देव–यज्ञ, लघु नाटिका, लेख, भाषण, प्रश्नोत्तरी, भजन तथा 3 डी मॉडल आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। डेराबसी, चण्डीगढ़, पंचकूला, मोहाली, सूरजपुर के डी.ए.वी. विद्यालयों के लगभग 350 विद्यार्थियों ने इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

भजन गायन में विद्यार्थियों ने समां बाँध दिया तथा महात्मा हंसराज जी के जीवन पर आधारित बहुत सुन्दर 3 डी मॉडल बनाए। हवन के द्वारा सारा वातावरण ही भक्तिमय हो गया। डॉ. पुनीत बेदी (रीजनल डायरैक्टर) ने कार्यक्रम की भूरि–भूरि प्रशंसा की। प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

श्रीमती जया भारद्वाज ने उपस्थितजनों का धन्यवाद किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

डी.ए.वी. खेडा खुर्द को मिला ''ग्रीन इनिशियेटिव'' पुरस्कार

डीए.वी. खेडा खुर्द की प्रधानाचार्या श्रीमती देविकादत्त और ईको कल्ब की अध्यक्षा श्रीमती ज्योत्स्ना श्री वास्तव को क्राउन प्लाजा रोहिणी में 'इकोंस सोल्यूशन' द्वारा आयोजित शिक्षा सम्मेलन में 'ग्रीन इनिशियेटिव' श्रेणी के अंतर्गत विशेष और उत्तम शिक्षा को विस्तृत करने के लिए पुरस्कृत किया गया। शैक्षिक गुणवत्ता के लिए मिले इस पुरस्कार से ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में सभी उत्साहित हुए।

झज्जर में हुआ 21 कुण्डीय हवन यज्ञ

भारत स्वाभिमान झज्जर के तत्वाधान में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भारत स्वाभिमान, बाल ओजस योग समिति, द्वारा बाबा प्रसाद गिरि मन्दिर में 21 कुण्डीय हवन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री रामनिवास योगार्थी की देखरेख में प्रशिक्षित बच्चों ने अलग–अलग कुण्डों पर अपने परिवार के सदस्यों के साथ यज्ञ में आहुतियां प्रदान कीं। नौवीं कक्षा की छात्रा कु. कनिका यज्ञ की ब्रह्मा रही।

सेवाव्रती ब्र. इन्द्रजीत जी ने गुरु की महिमा पर प्रकाश डालते हुए कहा – "गुरु" एक दिव्य चेतना के रूप में निरन्तर हमें मार्गदर्शन देते हैं, हमें आत्मधर्म, स्वधर्म एवं राष्ट्रधर्म का बोध करवाते हैं। ऐसी गुरु सत्ता, दिव्यात्मा के संस्पर्श से हमारा जीवन आलोकित, सुहासित हो जाता है। उपस्थित महानुभावों के स्वागत में बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया व कठिन आसनों का भव्य प्रदर्शन किया। होनहार बच्चों एवं समाज सेवियों को स्मृति चिह्नों से सम्मानित किया गया।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**